(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 51, अंक 8, फरवरी, 2016,
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

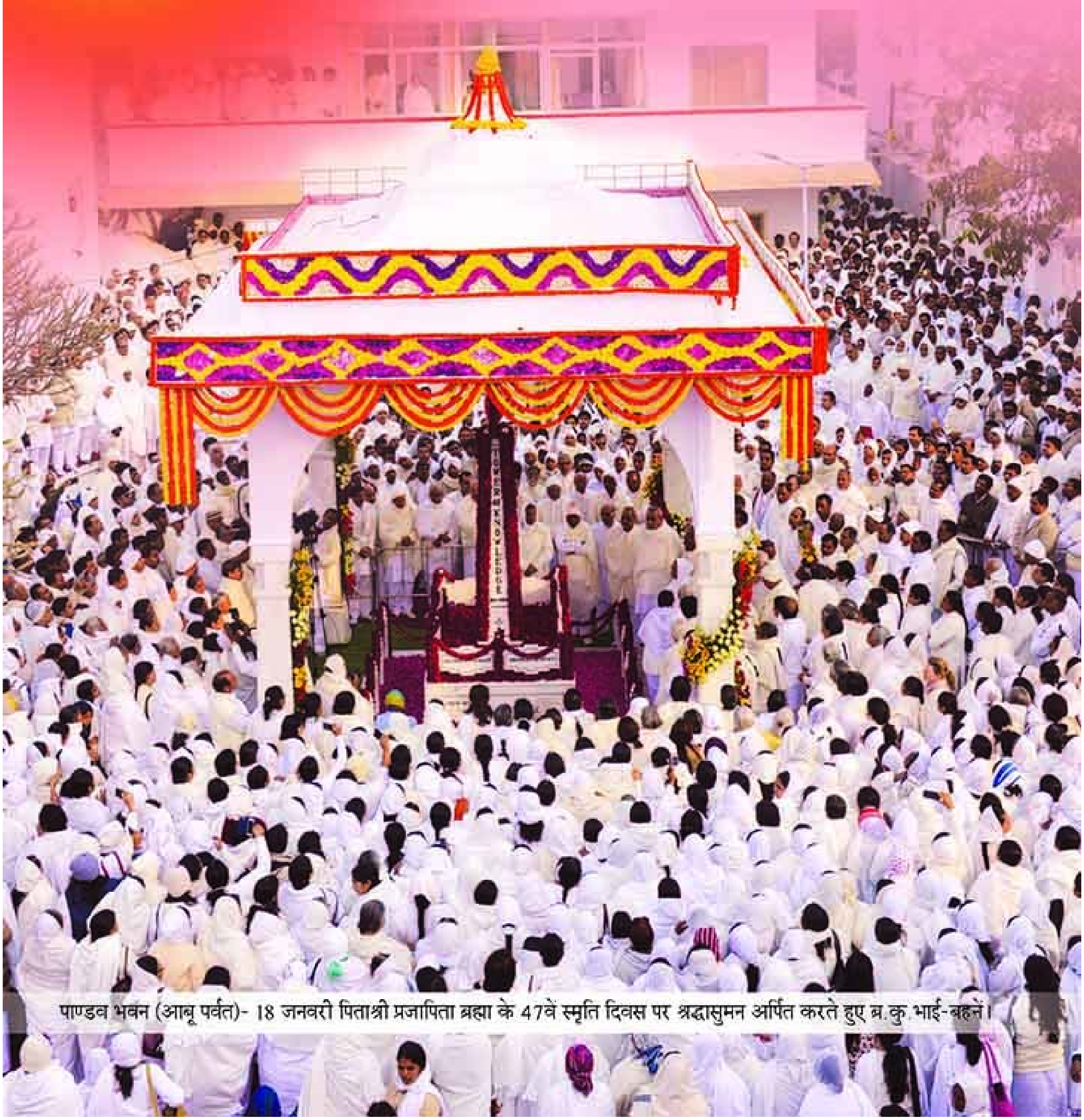

पाण्डव भवन (आबू पर्वत)- 18 जनवरी पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के 47वें स्मृति दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए ब्र.कु.भाई-बहनें।

1.पूना (पिंपरी)- ब.कु.सुरेखा बहन, दादा वासवानी जी को मुख्यालय माउंट आबू आने का निमंत्रण देते हुए। **2.भोपाल-** मध्यप्रदेश के राज्यपाल महामहिम भाता रामनरेश यादव को 66 प्रकार का भोग अर्पित करते हुए ब.कु.अवधेश बहन। **3.शिलॉंग-** मेघालय के राज्यपाल महामहिम भाता वी.शण्मुगनाथन को दादी जानकी के शताब्दी समारोह का निमंत्रण देते हुए ब.कु.नीलम बहन। **4.देहरादून-** उत्तराखण्ड के राज्यपाल महामहिम भाता के.के.पॉल से ज्ञान चर्चा करते हुए ब.कु.मन्जू बहन। **5.आईजल (मिजोरम)-** मिजोरम के राज्यपाल महामहिम लेफ्टिनेन्ट जनरल भाता निर्भय शर्मा और उनकी धर्मपत्नी को ईश्वरीय निमंत्रण देते हुए ब.कु.नर्मदा बहन। **6.पूना-** दादी जानकी के शताब्दी समारोह का निमंत्रण पूर्व राष्ट्रपति बहन प्रतिभा पाटिल को देते हुए ब.कु.दीपक भाई, ब.कु.रूपा बहन तथा ब.कु.गीतिका बहन। **7.विजयवाड़ा-** आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री भाता चन्द्रबाबू नायडू को नववर्ष की मुबारक देते हुए ब.कु.पद्मजा बहन और ब.कु.उमा राजेश्वरी बहन। **8.दिल्ली (महिपालपुर)-** दिल्ली के मुख्यमंत्री भाता अरविन्द केजरीवाल तथा विधायक भाता देवेन्द्र सहरावत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु.अनुसूईया बहन। **9.श्रीरेणुकाजी (नाहन)-** चरित्र निर्माण आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए हि.प्र.के मुख्यमंत्री भाता वीरभद्र सिंह। साथ में हैं ब.कु.रमा बहन, ब.कु.दीपशिखा बहन तथा अन्य।**10.सण्डूर-** कर्नाटक के मुख्यमंत्री भाता सिद्धारमैय्या को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु.नागवेणी बहन।**11.लखनऊ-** कांग्रेस पार्टी उपाध्यक्ष भाता राहुल गांधी को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब.कु.मीरा बहन उनकेसाथ। 12.ग्वालियर(महाराजपुर)- केन्द्रीय जल संसाधन तथा नदी विकास मन्त्री बहन उमा भारती को मुख्यालय, माउंट आबू पधारने का निमंत्रण देते हुए ब.कु.ज्योति बहन।

संजय की कलम से

जय इंसान, जय ईमान

देश के नेताओं ने नारा दिया 'जय किसान, जय जवान' परन्तु क्या ही अच्छा होता यदि हमारा नारा 'जय इंसान, जय ईमान' होता क्योंकि जब तक इन्सान सही अर्थ में 'इंसान' नहीं बनता और जब तक उसके जीवन और कर्मों में धर्म और ईमान नहीं आता तब तक उसकी जय हो ही नहीं सकती और मनुष्य के जीवन में ज्ञान और धर्म की स्थापना तभी हो सकती है जब वह ईश्वरीय ज्ञान और योग द्वारा अपनी आत्मा में बल भरता है।

सोचने की बात है कि आखिर हम जय किस पर प्राप्त करना चाहते हैं? आखिर हमारे शत्रु कौन हैं? वास्तव में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ही हमारे शत्रु अथवा रिपु हैं क्योंकि इन्हीं से ही हमें सभी प्रकार के दुख हुए हैं। अत: विजय तो हमें इन शत्रुओं अथवा रिपुओं पर प्राप्त करनी है। इसके लिए हमें ज्ञान और योग ही के बल की आवश्यकता है। जब भारत के किसानों और जवानों (युवकों) की इन पर विजय थी तब यह भारत स्वर्ग था। 'भारत' (भा + रत) का अर्थ ही है – 'वह देश जो प्रसन्नता से आलोकित हो', 'जहाँ प्रकाश और सुख हो।'

हमें याद रखना चाहिये कि जय सदा सत्य की, पवित्रता की अथवा धर्म और ईमान की होती है। इन सद्‌गुणों को छोड़कर हम क्षणिक जय भले ही प्राप्त कर लें परन्तु उस जय में न शान्ति और न शक्ति होती है और न सन्तोष और स्थायित्व होता है। अत: अब हमें 'जय धर्म, जय ईमान' अथवा 'जय योग, जय ज्ञान' अथवा 'जय मानवता, जय भगवान' या 'जय सद्‌गुण, जय शिव भगवान' ही का नारा अपनाना चाहिये। हमारा मतलब यह नहीं है कि ऊँचे-ऊँचे स्वर से इन शब्दों को अलापना चाहिए। नहीं, कदापि नहीं। हमारा भाव यह है कि इन्हें स्मृति-पट पर अंकित करके अपने जीवन को इनके अनुसार ढालना चाहिये वरना आज जो परिणाम है वह हमारे सामने है। ईश्वर से विमुख होने से हम सुख और शान्ति से भी विमुख हो चुके हैं। अफसोस है कि आज भारतवासियों ने यह भुला दिया है कि जय उस किसान की होगी जो पवित्र और दिव्य गुणों से युक्त होगा। जय उस जवान की होगी जो ईश्वर-प्रेमी, सदाचारी और निर्विकारी होगा। ❖

❀ अमृत सूची ❀

- लौकिक और अलौकिक मित्र... (सम्पादकीय) 4
- मधुबन वतन हमारा (कविता) 7
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के ...8
- वाह ड्रामा वाह! 10
- जीवन है परमात्मा की अमानत .13
- बाबा की गोद में 14
- एक महाभ्रान्ति नारी के प्रति 15
- प्रभु मिलन की वेला (कविता).... 16
- वो कौन थे? 17
- स्वर्णिम भाग्य से मुलाकात 18
- बच्चा गुलाब की तरह..........19
- मानव जीवन में धन...........20
- भगवान ने अपनों से मिलवाया..23
- जरूरी है नींद 24
- भ्रष्टाचार रूपी भस्मासुर 25
- 'पत्र' संपादक के नाम 26
- घुटनों व कूल्हों की सर्जरी 26
- बाबा ने रात में जगाकर कहा ..27
- ज्ञानामृत से मिली ज्ञान की राह .28
- संपूर्ण स्वच्छता की ओर 30
- ज्ञानामृत (कविता) 31
- सचित्र सेवा समाचार 32
- भाग्य या त्याग 34

फार्म – 4

नियम 8 के अंतर्गत अपेक्षित पत्रिका का विवरण

1. प्रकाशन : ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)-307510

2. प्रकाशनावधि : मासिक

3. मुद्रक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता – उपरोक्त

4. प्रकाशक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता – उपरोक्त

5. सम्पादक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता – उपरोक्त

सम्पूर्ण स्वामित्व : प्रजापिता ब्र.कु.ई.वि.विद्यालय

मैं, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

(ब्र.कु. आत्म प्रकाश)
सम्पादक

सम्पादकीय ..

लौकिक और अलौकिक मित्र प्रति श्रद्धा सुमन

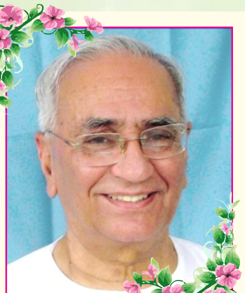

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सर्व के स्नेही, गम्भीरता के साथ रमणीकता का सन्तुलन रखने वाले, ईश्वरीय सेवा के प्रति नई-नई योजनायें तैयार करके उन्हें शीघ्र से शीघ्र क्रियान्वित कराने वाले, मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष, कुशल वक्ता और लेखक, योगबल, पवित्रता के बल तथा बाबा की मदद से हजारों आत्माओं का जीवन बनाने के निमित्त, साकार मात-पिता तथा दादियों के हस्तों में पले हुए इन्दौर ज़ोन के निदेशक भ्राता ओमप्रकाश जी को सभी प्यार से 'भाई जी' शब्द से सम्बोधित करते रहे। बापदादा के ये अनन्य रत्न 25 दिसम्बर, 2015 प्रात: करीब 00.30 बजे अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोदी में समा गये। आपके शरीर की आयु लगभग 79 वर्ष थी। आपको पिछले 5 मास से लीवर की तकलीफ थी।

आपने 1955 में 19 वर्ष की उम्र में अम्बाला से ज्ञान प्राप्त किया, फिर पटियाला में इन्जीनियरिंग की पढ़ाई करते समय अपने त्यागमूर्त, आदर्श जीवन की छाप सभी पर डाली। उस समय आत्मप्रकाश भाई (ज्ञानामृत प्रेस, आबू) आपके सहपाठी थे, उन्हें ज्ञान देकर अपना साथी बनाया। फिर दोनों ही सेवा में समर्पित हो गये। पहले आप पंजाब, हरियाणा में अपनी सेवायें देते रहे फिर बापदादा की विशेष प्रेरणा से मध्य प्रदेश में आकर जबलपुर, इन्दौर तथा उनसे लगे हुए राज्यों में लगभग 400 सेवाकेन्द्र, उपसेवाकेन्द्र स्थापित किये। इन्दौर में कन्याओं के लिए विशेष 'दिव्य कन्या छात्रावास' की स्थापना कराई जिसमें अभी तक सैकड़ों कन्याओं ने ज्ञान-योग की पालना के साथ लौकिक शिक्षा प्राप्त की। उनमें से कई कन्यायें समर्पित हो आदर्श ब्रह्माकुमारी टीचर बनकर अनेक स्थानों पर ईश्वरीय सेवायें कर रही हैं। छत्तीसगढ़ में राजधानी के समीप बहुत सुन्दर रिट्रीट सेन्टर 'शान्ति सरोवर' का निर्माण कराया। आदिवासी बहुल क्षेत्र बस्तर में आदिवासी उत्थान परियोजना द्वारा आपने हजारों आदिवासियों के जीवन में परिवर्तन किया तथा 75 गीता पाठशालायें खोली। ऐसे अथक सेवाधारी, सर्व के दिलों पर राज्य करने वाले, हजारों भाई-बहनों के आध्यात्मिक मार्गदर्शक ओमप्रकाश भाई एडवांस पार्टी में भी विशेष नई दुनिया की प्लैनिंग में अपना नया पार्ट बजायेंगे। सम्पूर्ण दैवी परिवार ऐसी महान आत्मा को बहुत-बहुत दिल से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

ज्ञानामृत पत्रिका के प्रधान संपादक भ्राता आत्मप्रकाश जी लौकिक और अलौकिक मित्र के रूप में एक लंबे अरसे तक उनके साथ रहे। उनके साथ बिताये अमूल्य संस्मरणों को पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं... संयुक्त संपादिका

भ्राता ओमप्रकाश जी इस विश्व नाटक में ईश्वरीय सेवा के अपने अप्रतिम पार्ट को समेटकर हमसे विदा हो गये। उनके साथ बिताये मधुर पलों की दिव्य स्मृति रह-रहकर मानस-पटल पर साकार हो उठती है। 60 वर्षों तक वे ईश्वरीय परिवार में अपने स्नेह, सहयोग और सेवा की सुगंध फैलाते रहे। विश्वास ही नहीं होता कि वे आज हमारे साथ नहीं हैं। एक लंबा समय उनके साथ बिताने का सुअवसर मिला। वे मेरे लौकिक और अलौकिक मित्र थे। 1957 का वर्ष था जब मैं और भ्राता ओमप्रकाश जी पटियाला में थापर इंजीनियरिंग कालेज में पढ़ते थे। ज्ञान में आने से पहले उनकी इच्छा थी इंजीनियर बनने की। ज्ञान मिलने के बाद उनका चयन इंजीनियरिंग कॉलेज में हो

गया। चयन का पत्र देखकर वे खुश नहीं हुए। उनको तो यही लगन थी कि मुझे तो श्रीनारायण जैसा बनना है, इंजीनियर नहीं बनना है। मुझे तो सारे विश्व की सेवा करनी है। बाबा से राय मांगी तो बाबा ने उन्हें कहा कि आप इंजीनियरिंग कॉलेज ज्वाइन कर लो। इससे भी बहुत सेवा होगी। बाबा की आज्ञा मानकर उन्होंने इंजीनियरिंग कॉलेज में एडमिशन लिया। कॉलेज में हर एक को अलग कमरा मिलता था। मेरा 113 नंबर का कमरा था और भ्राता ओमप्रकाश जी का 112 नंबर का कमरा था। मैं उनके कमरे में आता-जाता था। उनकी अंतर्मुखता, शांत स्वभाव और स्नेही व्यवहार को देखकर मैं प्रभावित होता था। उनके पाँव में कुछ कमी होते भी वे बहुत चुस्त थे।

मैं भारत माता पर एक गीत गाता था। वे मुझसे पूछते थे कि ये भारत माता है कौन? मैं कहता था कि भारत माता अर्थात् धरती माँ। वे कहते कि यह तो जड़ है। इस प्रकार हमारी बातचीत शुरू हुई। फिर उन्होंने मुझे आत्मा का ज्ञान सुनाया। तीन-चार दिन थोड़ी बहस के बाद मैंने मान लिया कि हम शरीर नहीं, आत्मा हैं। उसके बाद मेरा जीवन ही बदल गया। मैं शुक्रगुजार हूँ उनका कि उन्होंने मुझ आत्मा में सुषुप्त आध्यात्मिक प्रकाश को प्रदीप्त किया और निमित्त बन इस महान आध्यात्मिक पथ पर मेरा मार्ग प्रशस्त किया। हम दोनों हमउम्र सहपाठी साथी थे, हमारे लौकिक नाम के शब्दों में जो अर्थ साम्यता थी, वह प्राय: आकर्षण, आनंद और संभ्रम पैदा करती थी। साकार बाबा कभी-कभी हमें एक-दूसरे के नामों से संबोधित कर हँसते-बहलाते थे।

मर्यादाओं में पक्के

नियम-मर्यादाओं का उल्लंघन उन्हें बिल्कुल बर्दाश्त नहीं था। हॉस्टल के दिनों में मैं सिनेमा देखने का बहुत शौकीन था। ओमप्रकाश भाई ने एक दिन मेरा हाथ पकड़ा और मुझसे प्रतिज्ञा कराई। उस दिन से सिनेमा जाना छूट गया। वे समाचार आदि पढ़ते-सुनते थे केवल सेवा अर्थ।

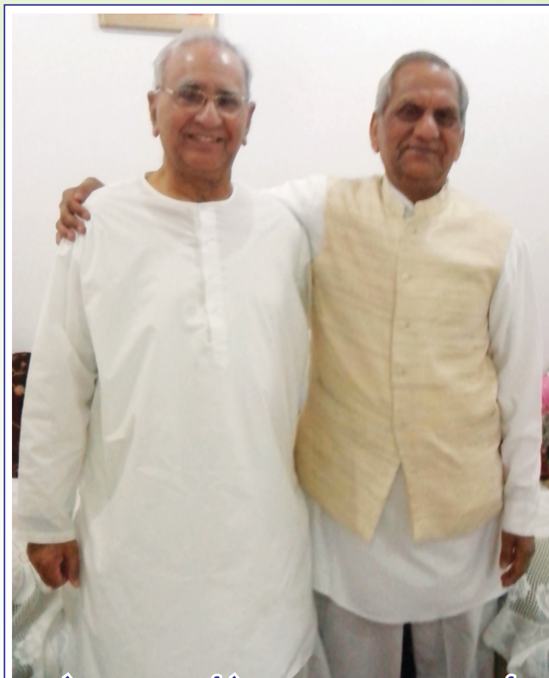
ओमप्रकाश भाई के साथ आत्म प्रकाश भाई

साकार बाबा को पूरा फालो करने का प्रयत्न करते थे। जब मैं शांतिवन में उनके कमरे में जाता था तो खूब हँसाते भी थे। हर बार जब उनके साथ ज्ञान-चर्चा होती तो वे ज्ञान के नये-नये प्वाइंटस सुनाते थे।

बाबा की अंतिम आज्ञा पालन की

पढ़ाई के दौरान ही हम दोनों ईश्वरीय सेवा में लग गये और बाबा ने पंजाब में कई सेवाकेन्द्र खोलने के निमित्त बनाया। पढ़ाई खत्म करने के बाद बाबा ने भ्राता ओमप्रकाश जी को जबलपुर में ईश्वरीय सेवा के लिए भेजा और मुझे आदरणीय भ्राता जगदीश जी के पास भेजा। जब-जब भी भ्राता ओमप्रकाश जी को ईश्वरीय सेवा में मदद की आवश्यकता पड़ी तब-तब मैं या तो स्वयं गया या किसी अन्य को भेजा। 13 जनवरी, 1969 को ब्रह्मा बाबा ने माउंट आबू से भाई जी को पत्र लिखा जिसमें इंदौर में सेवा हेतु जाने का निर्देश दिया। इस प्रकार 18 जनवरी, 1969 को ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के पश्चात् उनकी

अंतिम आज्ञा का पालन करते हुए उन्होंने 23 फरवरी, 1969 में इंदौर के गांधी हॉल में ईश्वरीय ज्ञान की प्रदर्शनी लगाकर ईश्वरीय सेवाओं की शुरूआत की।

बाबा को प्रत्यक्ष करने की दिली तमन्ना

समय बीतता गया, भ्राता ओमप्रकाश जी ने अपनी त्याग, तपस्या और सेवा से जबलपुर, इंदौर, कोटा, मध्यप्रदेश के अनेकानेक शहरों, गाँवों में ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों का जाल बिछा दिया। उन्हें नई-नई सेवायें करने का बहुत उमंग-उत्साह था। नये-नये प्रोजेक्ट बनाये। रायपुर में पहला रिट्रीट सेन्टर खोला। शुरू-शुरू में जब सच्ची गीता साहित्य मंडल था तो उन्होंने दो छोटी-छोटी पुस्तकें लिखीं – परमात्मा का परिचय तथा सच्चा योगी जीवन जो हमने रंगीन टाइटल के साथ छपवाईं। जब रामलीला मैदान में पहला बड़ा मेला लगाया गया तो उन्हें गीता के भगवान का स्टाल दिया गया। उन्होंने कई नये चित्र बनवाये जो हमने बाद में शिवाकाशी में छपवाए और विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी में शामिल किये। इस प्रकार वे बाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए सदा कुछ न कुछ नया करते रहते थे।

योग्य प्रशासक

वे योग्य प्रशासक थे। उन्होंने इंदौर जोन के 400 सेवाकेन्द्रों का बड़ी कुशलता से संचालन किया। कोई भवन, धर्मशाला, हॉस्पिटल आदि बनाना तो सहज है लेकिन ज्ञान और गुणों की खुशबू से आत्माओं के चरित्र को महकाना और महकते हुए चैतन्य फूलों की फुलवारी लगाना कितना कठिन और श्रेष्ठ कार्य है जिसे भ्राता जी ने अपनी प्रशासनिक सूझ-बूझ से सहज कर दिया। वर्तमान में इंदौर अनेकानेक सेवाकेन्द्र, उपसेवाकेन्द्र, गीता पाठशाला आदि शाखाओं से संपन्न भरा-पूरा जोन बन गया है। अपने साथी सभी ब्रह्माकुमार भाई-बहनों को वे बड़े स्नेह की पालना देकर चलाते थे। कभी किसी की कमजोरी को मन में नहीं रखते थे और कमजोरी को दूर कर उस आत्मा को ऊँचा उठाने का लक्ष्य सदैव उनका रहता था। छोटी से

ब्रह्मा बाबा के साथ ओमप्रकाश भाई

छोटी बहन को भी उसकी विशेषता के आधार पर आगे बढ़ाते थे। उनके आध्यात्मिक मार्गदर्शन में अनेक कुमारियों ने अपना जीवन समर्पित किया। उन्होंने सारे जोन को एक सूत्र में बांधकर रखा। मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष होने के नाते उन्होंने मीडिया में सकारात्मक सोच लाने हेतु अथक प्रयास किया जिसका परिणाम यह रहा कि इंदौर के पत्रकारों ने सकारात्मक सोमवार पहल शुरू की जिसके अंतर्गत हर सोमवार केवल सकारात्मक खबरें प्रकाशित करने का संकल्प लिया। उनकी एक विशेषता यह भी थी कि कोई कितना भी उनके विरुद्ध हो, वे अपनी बात पर कायम रहते थे। विपरीत से विपरीत परिस्थिति में भी अचल-अडोल एवं हर्षित रहते थे।

अंतिम हिसाब-किताब

अगस्त 2015 में उनकी तबीयत में कुछ गड़बड़ हो गई पर उनकी आंतरिक स्थिति बहुत श्रेष्ठ थी। मैं उनसे मिलने इंदौर गया। लीवर में खराबी अधिक बढ़ गई थी। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था। फिर उनकी इच्छानुसार उन्हें रायपुर ले जाया गया। मैं भी 12 दिन उनके साथ उनकी इच्छा अनुसार रहा। दर्द बढ़ रहा था परंतु वे दर्शाते नहीं थे, बाबा उनकी मदद कर रहा था। इतनी कड़ी बीमारी में भी उनके चेहरे पर कोई दुख के चिह्न नहीं थे। जब पूछते थे, दर्द है तो इशारे से मना कर देते थे। मैं उनसे छुट्टी लेकर वापिस शान्तिवन आ गया। फिर 23 दिसंबर को उनके 79वें

जन्मदिवस पर इंदौर जाना हुआ। दादी जानकी जी, भ्राता निर्वैर जी और समस्त मधुबन निवासियों की याद-प्यार, सौगात और शुभकामनायें लेकर जब मैं पहुँचा तो मालूम पड़ा कि उनका बोलना बंद हो गया है। जब ओमशान्ति बहुत बार बोला तो सिर्फ होंठों को ही हिलाया, आवाज नहीं निकली। उनकी शारीरिक हालत लगातार बिगड़ रही थी। 24 दिसंबर बीत गया। मैं और कुछ बहनें उनके सामने खड़ी थीं। ऑक्सीजन कम होने लगी और रात 12 के बाद लगभग 12.30 बजे उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं। सहज ही आत्मा ने शरीर से विदाई ली। मैं संतुष्ट हूँ कि अपने लौकिक अलौकिक मित्र के अंतिम श्वास तक साथ रहा।

मैं कह सकता हूँ कि वे सच्चे अर्थों में महान योगी और अथक सेवाधारी थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन बाबा को प्रत्यक्ष करने में लगा दिया। मेरे प्रति उनका जो निर्मल और नि:स्वार्थ स्नेह था, वह सदा मेरे हृदय को स्पर्श करता रहा। एक आध्यात्मिक अग्रज के रूप में उनकी छत्रछाया और आशीर्वाद का हाथ सदैव मुझ पर बना रहा। ऐसी महान आत्मा ने भले ही अपनी नश्वर देह का त्याग किया है पर वे हमेशा हमारी यादों में, हमारे संकल्पों में एक आदर्श के रूप में, एक मार्गदर्शक के रूप में जीवित रहेंगे। उनके जीवन चरित्र सदैव हमें प्रेरणा देते रहेंगे। उनके प्रति मैं अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

ओमप्रकाश भाई के प्रति बाबा का संदेश

''भले बच्चे का अपना थोड़ा पुराना हिसाब-किताब था जो बच्चे ने इस जन्म में पूरा किया पर बच्चे का पुण्य और भाग्य बहुत ऊंचा रहा है। बच्चे ने बहुत दिल से कई आत्माओं को जीयदान दिया है और ज्ञान की नई रोशनी दी है। बच्चा अंत तक बहुत सर्विसएबल रहा। बच्चे ने जोन पर बहुत मेहनत की, बहुत अटेन्शन दिया इसलिए सभी का प्यार रहा। बच्चे की विशेषताएँ बहुत हैं और यही विशेषताएँ कहें या पुण्य का खाता कहें बच्चा साथ लेकर के गया है। इसलिये बच्चा जहाँ भी जायेगा, जिस स्थान पर भी बाबा भेजेगा, वहां अच्छे से अच्छा पार्ट बजायेगा।''

मधुबन वतन हमारा

ब्रह्माकुमारी उषा ठाकुर, मीरा सोसाइटी, पूना

कितना सुन्दर, कितना प्यारा, मधुबन वतन हमारा,
तीर्थराज यह सब धर्मों का, सारे जग से न्यारा।
कितना सुन्दर.....................

शिव बाबा की अवतरण भूमि, ब्रह्मा बाबा की कर्मभूमि,
बच्चों के परिवर्तन की भूमि, यह धन्य-धन्य वरदान भूमि।
धन्य हो गया जीवन उसका, जो एक बार पधारा,
कितना सुन्दर.....................

नित बाबा की मुरली बजती, ज्ञान की गंगा बहती,
कल-कल बहती धारा इसकी, वसुधा को पावन करती।
जो रोज करे स्नान, बने वो कमल-पुष्प सम न्यारा,
कितना सुन्दर.....................

चैतन्य सुमन का है यह उपवन, ब्रह्मा जिसका माली,
प्रेम, शान्ति की खुशबू फैले, तप, त्याग, स्नेह की लाली।
बागवान है परमपिता शिव प्यारा पिता हमारा,
कितना सुन्दर.....................

सागर गंगाओं और सरोवर का यह अनुपम संगम,
जिसमें तन-मन जीवन सब होता है निर्मल पावन।
हरिद्वार यह प्रयागराज और सब तीर्थों का राजा,
कितना सुन्दर.....................

बाबा के संग प्रिय दादियाँ हम सबकी हैं प्राण,
दिव्य गुणधारी फरिश्तों से महके यह उद्यान।
विचरण करूँ सदा मधुबन में, भूल गया जग सारा,
कितना मीठा, कितना प्यारा मधुबन वतन हमारा।

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

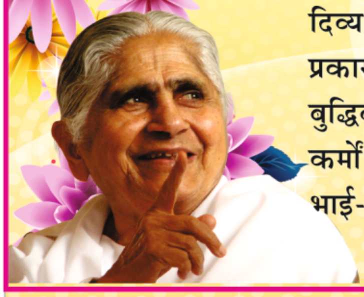

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः अलौकिक जीवन में सबसे बड़ा दुख क्या है?

उत्तरः अपमान का। इच्छा है मान की, दु:ख है अपमान का। अब इनसे परे अभोक्ता बनो, स्वमान में रहो। मेरा कोई अपमान करे तो सोचो, मेरी परीक्षा लेता है। ऐसे अन्दर ही अन्दर योगी बन करके अपने सहयोगी बनो, अपने को सहयोग दो। योग से सहयोग मिलता है। योग से बाबा का सहयोग बहुत है। बाबा ने इतना रॉयल बनाया है इसलिए कभी किसी से सहयोग लेना नहीं पड़ा है, जब जो जरूरत हो वो आपेही बाबा किसी न किसी के द्वारा सहयोग देता है। मैं नहीं समझती हूँ कि बाबा से भी कभी कुछ मांगा होगा।

प्रश्नः भोजन की आसक्ति भी एक बड़ी परीक्षा है, कैसे जीतें?

उत्तरः एक बारी बाबा ने परीक्षा ली। कराची में बहुत अच्छा 56 प्रकार का भोजन बनवाया, सभी खाने के लिए बैठे थे, बाबा सबको देख रहा था। अच्छा भोजन बना था, सबने बहुत अच्छी तरह से खाया। रात को क्लास में पूछा, कौन-सी चीज़ अच्छी थी? किसी ने कहा, बाबा यह अच्छा था, तो बाबा ने कहा, फेल। दूसरे दिन डायरेक्शन दिया, अभी सिर्फ डोडा, छाछ मिलेगी। जिसको यह खाना हो वो रहे और जो समझे, मैं बीमार हो जाऊंगा तो उनको दूसरे स्थान पर भेज दूँगा। जो बीमार थे वो बैठ गये। वो डोडा, छाछ खाकर वहीं रहे और जो अच्छे भले थे उन्होंने यह सोचा कि यह रोज़ कैसे खायेंगे, वो चले गये। ऐसे बाबा ने परीक्षा ली। तो ब्रह्माभोजन के लिए इतना रिगार्ड, इतना प्यार हो। ड्रामा अनुसार मेरे साथ छोटी बहन रहती थी। देखेगी, खाना अच्छा है तो कहेगी, मैं खाती हूँ और अगर खाना उसकी पसंद का ना हो तो कहेगी, मुझे भूख नहीं है। मैं कहती थी, यह तो तुम फेल हो जायेंगी। यह है मन-कर्मेन्द्रियों को जीतने का पुरुषार्थ करना। आजकल पुरुषार्थ में अटेन्शन कम है। सेवा है, यह है, वह है। प्यारे बाबा ने नियम, मर्यादायें बनाके दी हैं, उनसे सेवा हुई है। ज्ञान-योग कितना ऊंचा है, उससे सेवायें हुई हैं।

प्रश्नः किन-किन धारणाओं से जीवन कीमती बन जाता है?

उत्तरः लाइफ में तन, मन, धन, जन ये चार बातें होती हैं। पहले मन से पूछें, मन ठीक है? मन अगर भटक रहा है तो तन भी बीमार हो जाता है। अगर धन है तो फालतू खर्च करता है, नहीं है तो परेशान होता है। क्या करें? है तो सफल करो। कभी ख्याल नहीं आया होगा, कल हम कहाँ से खायेंगी। इस तन से सेवा करना, मन को फ्री रखना और मन से भगवान की याद में रहना, तो धन भी सफल हो जाता है। सेवा करो, खाना मिलेगा। साफ दिल से भगवान को राज़ी किया ना तो भगवान बड़ा साथ देता है इसलिए हमेशा कहती हूँ, भगवान मेरे से खुश हो। मुझे कोई खुश करे तो मैं खुश रहूँ, नहीं। भगवान खुश तो हम-आप सब खुश। सच्चा

दिल है, साफ दिल है, हमारा जीवन डायमण्ड जैसा हो। जीवन में अगर धारणायें नहीं हैं, धारणायें माना सच्चाई, प्रेम, विश्वास नहीं हैं तो जीवन की वैल्यू नहीं रहती है, स्वमान में नहीं रह सकते हैं। जो स्वमान में नहीं रहता है वो औरों को सम्मान नहीं दे सकता है। मेरे में झूठ का अंश भी न हो पर औरों का भी, पूरी दुनिया का भी झूठ खत्म हो जाये, यह विश्वास है क्योंकि प्रेम है ना आपस में। प्रेम पिघला देता है, भगवान के प्रेम ने ही हमारे सारे जीवन को वैल्यूएबल बना दिया। जीवन में सच्चाई, नम्रता है तो वैल्यू है। दूसरों को भी साथ, सहयोग दे करके वैल्यूएबल जीवन बनाना है। अन्दर में कोई बात नहीं रखो, सदा मुसकराओ। अकेले बैठे हो तो भी 'किसके साथ बैठे हो', यह याद हो तो मुसकराना मुश्किल नहीं है। कोई बात मुश्किल लगी तो मुसकराना मुश्किल है। बात मुश्किल नहीं है पर बात को मुश्किल समझके मुसकराना छोड़ दिया। यह अनुभव है कि कोई बड़ी बात को भी मुसकराके हल्का कर देंगे और कोई छोटी बात को बड़ा कर देते हैं। जिसको और कोई काम नहीं है वही छोटी बात को बड़ा कर देते हैं। कोई हैं, बड़ी बात को भी कहेंगे, सिम्पल बात है, छोटी बात है, धीरज रखो, कुछ नहीं है। जहाँ बात है वहाँ बाप नहीं, जहाँ बाप है वहाँ कोई बात नहीं।

प्रश्न: भगवान हमसे क्या मांगते हैं?

उत्तर: अच्छे कर्म करने के लिए उमंग-उल्लास चाहिए, सुस्ती नहीं हो। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के अलावा सुस्ती, ईर्ष्या, द्वेषभाव, अलबेलापन और बहाना बनाना, ये पाँच विकार और हैं। अच्छे काम के लिए बहाना देना, यह भी विकार है। अच्छा करना है, कर लो, अब कर लो। कैसे करें? क्वेश्चन नहीं है। भगवान बल देता है, करने से फल अच्छा निकलता है, दूसरों को फायदा मिलता है। जब मैं पहले दूसरों को खिलाऊँ तब तो दूसरा भी पहले मेरे को खिलायेगा ना। सिम्पल बात है पर बुद्धि स्वच्छ, शुद्ध, शान्त, श्रेष्ठ और दृढ़ होती है तब यह काम कर सकते हैं इसलिए भगवान कहता है, मुझे कुछ नहीं चाहिए, तुम बुद्धि मेरे को दे दो। गीता में भी है कि भगवान को इस साधारण बुद्धि से नहीं जाना जाता है, न इन आँखों से देखा जाता है। उसको जानने और देखने के लिए दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि चाहिए। अभी हम उसको जानते हैं, देखते हैं, बुद्धि वो देता है, बुद्धि से हम योग लगायें, वो शक्ति देवे। मुझे करना है तो यही करना है। अलबेलेपन में टाइम नहीं गंवाना है। तन से यज्ञ की सेवा जो भी करो, बहुत अच्छा है। बाबा कहते, मन को मेरे में लगा दो तो मन से मन्मनाभव हो जायेंगे। यह पढ़ाई है ही देवता बनने की। जब देवता बनेंगे तब थोड़े ही पढ़ेंगे। अभी पढ़ाई पढ़ रहे हैं। लायक बनना है। मैं बनेंगी या बन सकती हूँ? यह क्वेश्चन नहीं, मुझे बनना है। संकल्प को दृढ़ रखना है। सच-सच बोलो, मीठा-मीठा बोलो, धीरे-धीरे बोलो।

प्रश्न: बाबा आपसे इतना प्यार करते हैं, किस विशेषता के आधार पर?

उत्तर: मेरा नाम जनक, बाबा ने चेंज नहीं किया, जनक माना ट्रस्टी और विदेही। ट्रस्टी रहना माना अपने जीवन को सुरक्षित रखना। अनासक्त वृत्ति, नष्टोमोहा, बहुतकाल से यह ध्यान रखना है। जब हम सेवा पर बॉम्बे में आये थे, हमारी कई बहनें घड़ी पहनती थीं, तो मुझे भी सभी ने कहा, सेवा के लिये जाती हो तो तुम भी घड़ी पहनो। लौकिक माँ ने घड़ी लाकर के दी लेकिन मैंने नहीं पहनी क्योंकि मुझे यह हथकड़ी जैसी लगती थी। कइयों को लगता है, यह जरूरी है। मैंने कहा, नहीं, संगम के समय की घड़ी कम है क्या, बाबा ने इसलिए मुझे बहुत प्यार किया है। यह सब बातें अच्छी तरह से समझ के जीवन में लाने वाली हैं, बाकी हमारा यह फर्ज भी बनता है कि कोई कैसा भी हो, कहाँ भी हो, सबको शुभ भावना से अच्छे वायब्रेशन देते रहना।

गतांक से आगे ...

वाह ड्रामा वाह ! वाह बाबा वाह !

ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

उस समय मोहनलाल सुखाड़िया राजस्थान के रेवेन्यू मिनिस्टर थे, बाद में वो मुख्यमंत्री भी बने। मोहनलाल सुखाड़िया ने नोटिस दिया कि भरतपुर कोठी और कोटा हाउस वापिस चाहिएँ क्योंकि गर्मी के दिनों में मुख्यमंत्री को रहना होता है। मकान खाली करना था 31 दिसम्बर को और 30 दिसम्बर को दादा विश्वकिशोर जी मोहनलाल सुखाड़िया के पास गये और कहा कि हमें और दो महीनों की मोहलत दो लेकिन मोहनलाल सुखाड़िया ने कहा कि आपको कल कैसे भी करके इसे खाली करना ही होगा, नहीं तो मैं सिरोही के कलेक्टर को बोल करके आपका सामान बाहर फिकवा दूँगा। इतनी बड़ी समस्या में भी बाबा मूँझे नहीं परंतु बाबा ने युक्ति रची और दादा विश्वकिशोर को कहा कि आप पटना के हीरालाल जालान (तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी उनके मित्र थे) के साथ दिल्ली जाओ, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी से मिलो। उनसे हमें दो महीनों का समय और दिलाओ।

फिर दादा विश्वकिशोर और जालान डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी के पास गये। वहाँ उनके पी.ए. ने कहा कि बिना पूर्व अनुमति लिए राष्ट्रपति से नहीं मिल सकते। दादा ने कहा कि हम यहाँ ही बैठ जाते हैं; देखो क्या होता है। उतने में राष्ट्रपति जी अशोका हॉल से डायनिंग की तरफ नाश्ता करने के लिए जा रहे थे। हीरालाल जी को देखते ही राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा कि अरे हीरालाल, तुम यहाँ क्यों बैठे हो? अन्दर आओ। हीरालाल ने कहा, आपका पी.ए. मुझे अन्दर आने नहीं देता। फिर वे दोनों अन्दर गये। राजेन्द्र प्रसाद जी ने उन्हें नाश्ते के लिए कहा तो हीरालाल ने कहा कि तुम मेरा एक काम कर दो तो मैं नाश्ता करूँगा। जालान जी ने बताया कि ऐसे-ऐसे आबू में हमारे बाबा हैं, उन्हें मकान खाली करने के लिए कहा है और उसे खाली करने के लिए उन्हें दो महीनों का समय और चाहिए। राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा, क्या बड़ी बात है, अभी कर देता हूँ। उन्होंने नाश्ते से पहले ही अपने पी.ए. को बुलाया, पत्र लिखवाया और फिर उन्होंने नाश्ता किया। नाश्ता करने तक वह कागज टाइप होकर आया और राजेन्द्र प्रसाद जी ने राष्ट्रपति के नाते से हस्ताक्षर किये। फिर वे जालान जी के रिश्तेदार की कार से शाम को ठीक 4.45 बजे जयपुर के ऑफिस में पहुँचे। शाम 5 बजे ऑफिस बंद हो जाता है। फिर चिट्ठी भेजी तो मोहनलाल सुखाड़िया ने उन्हें अंदर बुलाया। दादा के ऑफिस में जाते ही उन्होंने पूछा, आपने मकान खाली किया या नहीं? दादा ने कहा, नहीं। वे बहुत क्रोधित हुए और उन्होंने अपने पी.ए. को बुलाया और दादा को कहा कि मैं अभी सिरोही कलेक्टर को फोन करने के लिए कहता हूँ। दादा ने कहा, आपसे मिलने के लिए मेरे मित्र आये हैं, मैं आपको उनसे मिलवाता हूँ। मोहनलाल सुखाड़िया ने कहा कि अभी तो भगवान भी आयेगा तो भी उनकी बात मैं नहीं मानूँगा। दादा ने कहा कि आपके जैसे छोटे आदमी के लिए भगवान को आने की जरूरत नहीं है, आपके लिए तो साधारण आदमी भी पत्र लिखे तो भी बहुत है। फिर हीरालाल जी को अन्दर बुलाया और हीरालाल जी ने कहा कि मेरा एक दोस्त है, उन्होंने आपके लिये एक पत्र लिखकर भेजा है। ऐसा कहते हुए उन्होंने वह लिफाफा मोहनलाल सुखाड़िया जी को दिया। लिफाफे के ऊपर लिखा था From, President of India, Rashtrapati Bhawan, New Delhi. पत्र में लिखा था, श्री मोहनलाल सुखाड़िया जी, श्री हीरालाल जालान जी मेरे खास दोस्त हैं, उनकी संस्था का मकान

आपने खाली करने के लिए कहा है, हम आपको अनुरोध करते हैं कि दो महीने का समय आप उन्हें और दे दो। फिर वे दोनों जालान जी के रिश्तेदार की कार में ही आबू आये और सबको बताया कि भरतपुर कोठी और कोटा हाउस में और दो महीने के लिए रह सकते हैं।

उस समय पर पोकरन हाउस जो अभी का पाण्डव भवन है, मिल रहा था। वहाँ पर घोड़ों का तबेला था, उनके पानी पीने का स्थान था और टेनिस के दो कमरे थे। बाबा ने उसे किराये से लिया। वहाँ पर कोई भी बहन जाने के लिए तैयार नहीं थी तो बाबा ने वायदा किया कि अच्छा मकान मिलेगा तो बाबा जरूर ले लेगा। उसके बाद कितनी परीक्षायें आईं। बेगरी पार्ट में 300 बहन-भाइयों की पालना की जिम्मेदारी बाबा पर ही थी। ड्रामानुसार गरीबी का पेपर सिर्फ 6 घण्टे के लिये ही आया था। जब बाबा सुबह 9 बजे नाश्ते पर गये तो एक रोटी और पतली दाल थी। बाबा ने भोली दादी भण्डारी से पूछा, बच्ची, बच्चों ने नाश्ता किया? भोली दादी ने कहा कि बाबा, बच्चों ने कुछ नहीं खाया क्योंकि कुछ है ही नहीं। तो बाबा ने कहा, कोई बात नहीं। ऐसे ड्रामा में बहुत परीक्षायें आती रही, जैसे हरिश्चंद्र व तारामति की कहानी में कितनी परीक्षायें आती हैं। जब उनके मृत बेटे को जलाने के लिए तारामति श्मशान में जाती है तो उसका पति हरिश्चंद्र, जो वहाँ पर चण्डाल का काम करता है, पूछता है कि क्या तुमने जलाने के लिए टैक्स जमा किया है? नहीं, तो इसका अग्नि-संस्कार नहीं होगा। ऐसे ही नल-दमयंती के व्याख्यान में भी बहुत परीक्षायें आती हैं।

परंतु हम सब पाण्डवों में कर्ण जैसे हैं जिन्हें समय पर ज्ञान याद नहीं आता है। बाबा को समय पर ज्ञान याद आता था और अचल-अडोल अवस्था रखना आता था। विकट समय पर भी बाबा घबराये नहीं बल्कि ड्रामा के ऊपर निश्चिंत रहे। बाबा अपने कमरे में गये। फिर विश्वरतन दादा को कहा कि जाओ बच्चे, पोस्ट लेकर आओ। पोस्ट खोली तो एक लिफाफे में 200 रु. मिले। तब बाबा ने उनको खाने-पीने का सामान खरीदकर लाने के लिए कहा। दूसरे दिन जब लिफाफा आया तो उसमें 1,000 रु. आये। फिर बाद में कई बहनों ने अपने रिश्तेदारों को पत्र लिखे और इस प्रकार सेवाओं के लिए निमन्त्रण भी मिलते गये और पैसा भी आता गया। कैसा वण्डरफुल ड्रामा है! क्या हम ऐसे निश्चयबुद्धि होकर ड्रामा को स्वीकार कर सकते हैं!

कुछ समय के बाद बाबा के पास एक और परीक्षा आई। बाबा के लौकिक पुत्र नारायण ने कहा कि बाबा, मैं लौकिक दुनिया में जाना चाहता हूँ। उनके साथ बाबा के पोते (बृजइन्द्रा दादी के बड़े बेटे) घनसी (घनश्याम भाई) ने भी कहा कि मैं भी अपने चाचा के साथ जाता हूँ। बाबा ने नारायण दादा और घनसी को एक पैसा भी नहीं दिया। मैंने नारायण दादा से पूछा, आप मुम्बई कैसे आये, तो दादा ने कहा कि हम ट्रेन में बिना टिकट आये। देखो, कितनी बड़ी परीक्षा बाबा के पास आई और नारायण दादा के पास भी। नारायण दादा और घनसी वस्तुत: (literally) फुटपाथ पर रहते थे। दीदी मनमोहिनी ने अपनी भाभी को लिखा कि बाबा का बेटा नारायण और पोत्रा घनसी मुंबई के लिए निकले हैं तो आपको अगर मिलें तो आप उन्हें सहारा देना। एक बार मुंबई की चौपाटी पर नारायण दादा और घनसी चल रहे थे तब दीदी की भाभी वहाँ से अपनी कार में जा रही थी। वह रुक गई और पूछा कि आप नारायण हो ना और तुम घनसी हो ना, तो उन्होंने कहा, हाँ। दीदी की भाभी उन्हें अपने घर ले गई। भोजन, कपड़े आदि दिये फिर धीरे-धीरे वे सेटल हो गये।

बाबा 1961 में मुम्बई में जाकर रहे। घनसी को बाद में चेचक हुआ तो उसे एक अस्पताल में ले गये। उसके शरीर से मवाद निकल रहा था। घनसी की अंतिम इच्छा थी कि मुझे बाबा से मिलना है। जब बाबा मिलने गये तो वह बाबा से चिपक गया और बाबा समझ गये, बाबा ने उसे अंतिम विदाई दी। बाबा की युगल यशोदा को भी जलोदर या कैंसर हुआ। वह नारायण दादा के घर में ही रही। तब बाबा

ने नारायण दादा को कहा कि तुम संभालो। अंतिम संस्कार हुआ तब भी बाबा नहीं आये। यशोदा माता ने भी बहुत त्याग किया। वे करोड़पति थी, जब ॐ मंडली में ड्यूटी विभाजन हुआ तब उन्होंने झाड़ू, पोचा और बर्तन करने की ड्यूटी माँगी। बाबा ने कारण पूछा, तब उसने बहुत सुन्दर जवाब दिया कि मुझे कभी ऐसा अभिमान आ सकता है कि मैं आपकी पत्नी हूँ। दादी निर्मलशान्ता को कहा कि आप कौन-सी ड्यूटी करेंगी तो उसने भी कहा कि मैं भी बर्तन मांजूंगी। ऐसी-ऐसी परीक्षायें बाबा के सामने आईं परंतु **बाबा ड्रामा पर अटल रहे।**

मम्मा, जो ॐ मण्डली की मुख्य थी, को कैन्सर हुआ था। डॉक्टरों ने उन्हें इलाज के लिए मुम्बई जाने के लिए कहा। मैंने बाबा को कहा कि मम्मा को आप हमारे घर भेजो। बाबा मान नहीं रहे थे। बाबा ने उस समय बहुत धैर्य से कारोबार किया। मेरी लौकिक बहन अनिला भी डॉक्टर थी। मातेश्वरी जी का ऑपरेशन हुआ और अनिला बहन ने मातेश्वरी जी को बहुत अच्छे से दवाई आदि दी और फिर उन्हें आबू भेज दिया। मम्मा के अंतिम संस्कार के बाद हम बाबा से मिलने गये। बाबा ने मुझे कहा कि बच्चे, परचाणी (शोक प्रगट करने) करने आये हो? मम्मा एडवान्स पार्टी में गई है। जब तक थी तब तक साथ था। **इस प्रकार बाबा ने ड्रामा को अपनी ढाल बनाया और आगे बढ़ते गये।**

दूसरे वर्ष फिर बाबा के सामने परीक्षा आई। पाण्डव भवन दादा विश्वकिशोर के नाम पर था। फिर वह मकान दादी प्रकाशमणि, दादी चन्द्रमणि, दीदी मनमोहिनी और दादी जानकी आदि के नाम पर हस्तांतरित करना था। तब मुम्बई से मैं, दादा विश्वकिशोर और उनकी लौकिक युगल संतरी दादी आये थे। भूरी दादी आबू रोड में हमें रिसीव करने रेलवे स्टेशन पर आईं और हमें बाबा की चिट्ठी दी और कहा कि आप लोग वेटिंग रूम में ही स्नान आदि करके नाश्ता कर लो और इस रिलीज डीड को रजिस्टर्ड करवा लो। रजिस्टर्ड करवाकर हम आबू में बाबा के पास गये।

दूसरे दिन जब हम जा रहे थे तब बाबा ने चन्द्रहास दादा को बुलाया और दादा विश्वकिशोर तथा मेरे साथ फोटो निकालने को कहा। मैंने ट्रेन में पूछा कि दादा, आज बाबा ने अपना नियम कैसे तोड़ा? उन्होंने बहुत ही विचित्र जवाब दिया और कहा कि बाबा को मालूम है कि यह मेरी बाबा के साथ अंतिम भेंट है। मैंने पूछा, वह कैसे, आपका तो केवल ऑपरेशन हो रहा है? उन्होंने कहा कि नहीं, मैंने बाबा को एप्लीकेशन दिया थी कि मैं एडवान्स पार्टी में जाऊंगा और बाबा ने मुझे छुट्टी दी है। यह भी एक बहुत बड़ी परीक्षा बाबा के सामने आई। मुम्बई में जब उनका ऑपरेशन हुआ तब दादी प्रकाशमणि जी ने बाबा को बताया कि दादा को नींद नहीं आती है। तब बाबा ने रात भर सकाश दिया और दादा को बहुत अच्छी नींद आई। पाँचवें दिन उनका शरीर छूटा। मैंने उनका शरीर आबू लाने के लिए सारी व्यवस्था की और बाबा को बताया पर बाबा ने मना कर दिया। बाबा ने कहा कि बच्चे, हमारा सम्बन्ध आत्मा के साथ था और आत्मा बाबा से छुट्टी लेकर गई है इसलिए आप मुम्बई में ही उनका संस्कार करो। **इतना बाबा ड्रामा की भावी के ऊपर निश्चिंत थे।**

1962 में मातेश्वरी जी पंजाब, हापुड़ और दिल्ली जाकर मुम्बई आई। मम्मा ने हापुड़ की परिस्थिति का वर्णन किया। बलदेव भाई के गले में सांप डाला गया था। उनका खाना, पानी, बिजली आदि सब बंद कर दिया था। मैंने बाबा को कहा कि मैं तो हापुड़ का समाचार सुनकर हिल गया, आपको कैसा लगा? बाबा ने बहुत सुन्दर जवाब दिया कि ड्रामा में जो भी परिस्थिति आती है, वह कल्प पहले मुआफिक आती है इसलिए उसमें कोई भी दु:ख, अशांति आदि नहीं आनी चाहिए। **सदैव यही होना चाहिए, वाह ड्रामा वाह!**

कैसी भी हालात हो, आप-हम सभी की अवस्था ऐसी अचल, अडोल बने, इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ यह लेख समाप्त करता हूँ। **(समाप्त)**

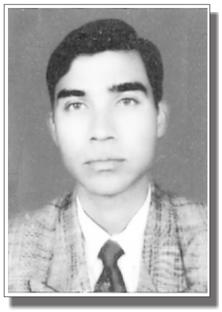

जीवन है परमात्मा की अमानत

ब्रह्माकुमार सन्दीप सिंघल, बहादुरगढ़

बात अक्टूबर, 2000 की है। मैं ओसवाल वूलन मिल्स, दिल्ली में मेन्टिनेन्स इन्जिनियर के रूप में कार्यरत था। एक दिन दिल्ली कार्यालय से बहादुरगढ़ की ओर सॅन्ट्रो गाड़ी चलाता आ रहा था। शाम के 7 बजे थे। मुण्डका (दिल्ली), शुभम वाटिका के नजदीक मैं किसी कार्य के लिए उतरा। जैसे ही वापस गाड़ी में बैठने लगा तो देखा, चार आदमी पहले से बैठे हुए थे। उन्होंने मुझे देखते ही पीछे की ओर खींच लिया और मेरी आँखों पर पट्टी बाँध दी। वे स्वयं गाड़ी चलाने लगे और मेरे से पूछताछ करने लगे। इसकी एफ.आई.आर. नांगलोई स्टेशन, दिल्ली में आज भी रिकार्ड में है।

उस समय तक ईश्वरीय ज्ञान के आधार से मेरी आत्मिक स्मृति व भाई-भाई की दृष्टि पक्की हो चुकी थी। उनके व्यवहार से अविचलित हुए बिना मैं चिन्तन करता रहा कि हम सब एक शिव पिता की सन्तान आपस में भाई-भाई हैं, ये भी मेरे भाई हैं पर अज्ञानतावश ऐसा कर रहे हैं। मुझे उनसे कोई भय नहीं लग रहा था और साथ ही यह संकल्प भी आ रहा था कि मुझ ईश्वर के बच्चे को हाथ भी लगाएँगे तो स्वर्ग में जाएँगे अर्थात् इनका उद्धार हो जाएगा। शिव बाबा कहते हैं कि वृत्ति से वातावरण बदलता है, मैं इस सत्य को साकार होते अनुभव कर रहा था। गाड़ी में सब कैसेट भक्ति के गीतों की बज रही थीं, उनका भी उनके मन पर अच्छा प्रभाव पड़ रहा था और मेरी बातों का भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता जा रहा था।

वे मुझे टिकरी बॉर्डर के पास पी.वी.सी.मार्केट की सुनसान सड़क पर ले गए। थोड़ा आगे चलकर वे उतरे, मुझे भी उतार दिया। एक ने कहा, इसे गोली मार दो। मुझे कोई डर नहीं लग रहा था और दिल में बाबा-बाबा की स्मृति थी। बाबा अपना कार्य कर रहे थे। बाबा कहते हैं, तुम सिर्फ मुझे याद करो, मैं तुम्हारी रक्षा का जिम्मेवार हूँ। दूसरे ने कहा, नहीं, यह भक्त आत्मा है, इसे छोड़ दो। इसे सिर्फ पेड़ से बाँध दो।

उनमें से एक की नजर मेरी उँगली में अँगूठी पर पड़ी। वे उसे निकालने लगे पर नहीं निकली। मैंने कहा, मैं इसे निकाल देता हूँ (मुझे पता नहीं था कि वह किस मेटल की है पर मुझे ब्रह्माकुमारी संस्था की चीफ दादी प्रकाशमणि जी ने दी थी, मेरी उसमें बहुत भावना थी)। मैंने अँगूठी उनके हाथ में दे दी। उन्होंने उसे तुरंत वापिस कर दिया। घोर अन्धेरा छाने लगा था। उन्होंने मुझे 10 फुट गहरे गड्ढ़े में पेड़ के साथ, मेरी ही कमीज से बाँध दिया और गाड़ी लेकर चले गये। मैं बहुत खुश था। मैंने बाबा को याद किया, कमीज अपने आप ढीली हो गई जैसे कि कोई खोल रहा है। मुझे बाबा की उपस्थिति का सहज अनुभव हो रहा था।

कमीज खुलने के बाद मैं पेड़ पर रूमाल बाँध कर वापस आ गया ताकि उस जगह को पहचान सकूँ। यह सारा कार्य 15 से 20 मिनट में हो गया। हिसाब-किताब के सूली से कांटा होने का अनुभव मुझे हो रहा था। किन शब्दों में बाबा का धन्यवाद करूँ, ये स्वर दिल में गूँज रहे थे।

मैं पैदल टिकरी बॉर्डर आया, वहाँ से पुलिस को फोन किया, पुलिस की गाड़ियाँ उस स्थान पर गईं और सारा मुआयना किया। मैं वापिस घर आ गया। दो दिन बाद ही गाड़ी मिलने की खबर भी आ गई। उसे सी.एच.एम.ई.सेल लोधी रोड, दिल्ली ने पकड़ा। साथ में 31 गाड़ियाँ और पकड़ी गईं। मैंने गाड़ी का नाम चेतक रख दिया, जो अपने स्वामी की रक्षा कर वापिस आ गई, पहले भी इस गाड़ी द्वारा बहुत ईश्वरीय सेवा के कार्य हो चुके थे। बाबा कहते हैं, जड़ चीज़ भी यदि बाबा की सेवा में लगेगी तो वह भी सुख

देगी। इसका स्पष्ट अनुभव मैंने किया।

इसके बाद एक महीना लग गया थाने से गाड़ी वापिस लेने में। अनुभव यह कहता है कि थाने में गाड़ी एक महीने खड़ी रहने के बाद उसमें से सब कुछ गायब हो जाता है परन्तु यह बाबा की कमाल थी, सेवा में लगी हुई उस गाड़ी का एक भी सामान गायब नहीं था। टायर, टेप रिकॉर्डर सब वैसे के वैसे थे। मुझे लगा कि बाबा ने मुझे नया जन्म दिया है, बाबा को जरूर कोई विशेष सेवा मेरे से करानी है। तब से मैं इस जीवन को परमात्मा की अमानत समझ कर चल रहा हूँ।

❖

बाबा की गोद में...

ब्रह्माकुमार आनन्द, खोरधा (उड़ीसा)

अक्टूबर, 2012 से मैं ईश्वरीय ज्ञान में चल रहा हूँ। बाबा के ज्ञान और लौकिक पढ़ाई – दोनों में पूर्ण सन्तुलन रखकर आगे बढ़ रहा हूँ। ज्ञान में आने से मेरे जीवन में अनेक प्रकार के श्रेष्ठ परिवर्तन आए हैं। कोई भी, कैसी भी परिस्थिति आई, उसका डटकर सामना किया है। मुरली के स्लोगन्स ने मेरे सोचने की शक्ति को शुभ दिशा दी है।

सेवाकेन्द्र की निमित्त बहनें पढ़ाती हैं कि बाबा को अपना मित्र बना लो, बाबा ऐसा मित्र है जो हर परिस्थिति में हमेशा साथ देता है। मैंने बाबा को पक्का मित्र बना लिया, उनको हर बात बताने लगा, मुश्किलें आने पर उनसे राय लेने लगा, मुझे अनुभव होने लगा कि बाबा हाथ पकड़कर सही दिशा में ले चल रहे हैं।

साल भर पहले एक दिन की बात है, मैं दिनचर्या अनुसार सुबह मुरली क्लास के बाद ट्यूशन पढ़ने गया, फिर कॉलेज गया। कॉलेज से आने के बाद मन कुछ विचलित होने लगा, मैंने खास ध्यान नहीं दिया। दोपहर को भोजन के बाद जब विश्राम करने गया तब अचानक पूरा तन ठंड से काँपने लगा जबकि मौसम गर्मी का था। यह बुखार का संकेत था। डॉक्टर्स उस समय क्लिनिक्स में नहीं थे। जब तापमान मापा गया तो थर्मामीटर ने 103^0F दिखाया। माता-पिता चिंतित होने लगे। वे पानी की पट्टी देकर बुखार को सिर पर चढ़ने से रोकने का प्रयास करने लगे पर 103^0F में अगर इलाज जल्दी न किया जाए तो बात ज्यादा गम्भीर हो सकती है। बिना डॉक्टर से राय लिए कोई दवा भी नहीं ली जा सकती थी।

मैं डरने लगा लेकिन तभी खुदा-दोस्त की याद आयी। उन्हें अपने पास बिठाकर मैं कहने लगा, ''मीठे बाबा...यह कैसा पार्ट चल रहा है, घर का माहौल तनाव वाला हो गया है, मैं 103^0F में हूँ और आप तो मजे में हैं, जल्दी मुझे ठीक करिए'', यह कहने के बाद मुझे प्रतीत हुआ कि मानो बाबा ने कहा, ''अच्छा बच्चे, ठीक है, आओ, तुम मेरी गोद में सिर रखकर सो जाओ, बाकी सब मेरे ऊपर छोड़ दो।'' बस, अपने मित्र के कहे अनुसार मैं उनकी गोद में गहरी नींद सो गया और अपना हाथ बाबा के हाथ में रख दिया। दोपहर के दो बजे थे। मैं इतनी गहरी नींद सोया मानो सारे संसार के सुख मुझे प्राप्त हो गए हों। नींद लगभग दो घण्टे बाद खुली और महसूस हुआ कि पूरा तन पसीने से भीगा हुआ है। मैंने तुरन्त माँ को आवाज दी और कहा कि अभी तापमान मापिए। जब रीडिंग आई तो मम्मी-पापा की आँखें फटी की फटी रह गयी, तापमान 98^0 था, वह भी बिना कोई दवा खाए। मुझे नहीं लगता कि यह किसी चमत्कार से कम है। मैंने तुरन्त बाबा का शुक्रिया किया। बाबा की गोद में मेरा सिर, हाथों में हाथ और दो घंटे, इन तीनों ने बुखार को भगा दिया। मैंने जिसको भी यह घटना सुनाई तो यही सुनने को मिला – ''प्रभु से मत कहो कि समस्या विकट है,

कह दो समस्या को कि प्रभु मेरे निकट है।''

एक महाभ्रान्ति नारी के प्रति

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

एक आध्यात्मिक कार्यक्रम की समाप्ति के बाद एक महिला ने चौंकाने वाला सवाल पूछ डाला। सवाल यह था, बहनजी, हमने सुना है, नारी मोक्ष की अधिकारी नहीं होती, क्या यह सत्य है? यदि यह सत्य है तो प्रवचन सुनने का लाभ क्या? बहन का प्रश्न सुनकर मैंने अपनी स्मृति को टटोला तो स्वर्गीय रामधारी सिंह दिनकर की पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' में लिखी हुई कुछ पंक्तियाँ याद हो आई कि भारत में नागे साधुओं की परम्परा में यह बात प्रचलित रही है कि नारी को मोक्ष पाने के लिए पहले नर चोला धारण करना होगा और नर चोले में नागा साधु के रूप में साधना करके ही मोक्ष पाया जा सकता है। नारी चोले में रहकर इस प्रकार की साधना सम्भव ही नहीं है। इस बात की पुष्टि के लिए प्रमाण भी मिल गया। उसी शहर में कुछ नागे लोग दूर एक धर्मशाला में ठहरे हुए थे। उनके साथ दो महिलाएँ भी थीं। महिलाओं से जब पूछा गया कि आप क्या साधना करती हैं तो उन्होंने बताया कि हम नारी चोले के उच्छेदन की साधना करती हैं। पहले इससे मुक्त होंगी, फिर नर चोला पाएंगी, फिर नागों की तरह साधना करेंगी, फिर मोक्ष को पाएंगी।

क्या किसी को मोक्ष मिला है?

आइये, पहले हम समझें, मोक्ष है क्या? क्या किसी को मोक्ष मिला भी है? जिसको मोक्ष मिला, वह अपना अनुभव बताने तो आएगा नहीं, फिर लोगों को कैसे पता पड़ेगा कि मोक्ष कैसा होता है? जिन्होंने वर्णन किया उन्हें कैसे पता पड़ा कि मोक्ष ऐसा होता है? शरीर छोड़कर जाने वाली आत्मा पुनर्जन्म में जाकर पशु-पक्षी बनी या नर चोले में गई या नारी चोले में गई या भूत-प्रेत बनी या स्वर्ग गई या मोक्ष में गई – इनमें से किसी बात का प्रमाण तो पीछे रहने वालों के पास होता ही नहीं है सिवाय अनुमान भरी मान्यताओं के।

नारी चोले में – देवियाँ और गोपियाँ

यदि हम मान भी लें कि पवित्र आत्मा मोक्ष को पाती है तो सवाल यह भी है कि वह पवित्र आत्मा धरती पर आने से पहले भी तो मोक्ष में ही थी। यदि वह पहले से ही पवित्र थी तो मोक्ष वाली स्थिति से नीचे उतरी ही क्यों? और यदि एक बार उतरी तो पुन: उतरने की स्थिति को कैसे नकारा जा सकता है? अत: वास्तविकता यह है कि बनी बनाई बन रही के अनुसार हर आत्मा को अपने अन्दर रिकार्डिड पार्ट अपने समय पर बजाना ही पड़ता है, सदाकाल के लिए मोक्ष तो भगवान को भी नहीं मिलता। जब उन्हें भी धर्मग्लानि के समय धरती पर आना पड़ता है तो बाकी आत्माएँ पार्ट से छूट नहीं सकतीं। रही बात स्त्री चोले में मोक्ष न मिलने की तो किंचित विचार करें, जिस चोले में सरस्वती, लक्ष्मी, सीता जैसी महानात्मायें पैदा हुईं, जिस चोले में महान् सौभाग्यशालिनी गोपियों ने जन्म लिया जिन्होंने स्वयं भगवान के साथ दिव्य एवं अलौकिक रास-विनोद किया और अपना सर्वस्व समर्पण कर अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति की तथा जिनकी चरण-रज पाने के लिए व्यास और शुकदेव ने भी कामना की, क्या वह चोला इतना अधम है? क्या पुरुष चोला सरस्वती, लक्ष्मी और सीता के नारी चोले से भी ऊँचा है?

एक प्रकार का चोला लगातार दो बार से अधिक नहीं

सहिष्णुता, त्याग, बलिदान तथा आत्म समर्पण का भाव तो माताओं-बहनों में स्वाभाविक होता है। एक पाश्चात्य सन्त ने कहा है, If thy soul is to go to higher spiritual blessedness, it must become a female however manly thou mayest be among men अर्थात् यदि आपको उच्चतर आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति करनी है तो आप पुरुषों में कितने भी शक्तिशाली क्यों न हों, आपको अपने में स्त्रीत्व का गुण लाना ही होगा।'' आज के विज्ञान के युग में तो अनेकों ऐसे प्रमाण हैं कि पिछले जन्म की नर तन धारी आत्मा ने, अगले जन्म में नारी तन धारण कर लिया या पिछले जन्म की नारी तन धारी आत्मा ने अगले जन्म में पुरुष चोला ले लिया। यह तो स्वाभाविक प्रक्रिया है। भगवान कहते हैं, कोई भी आत्मा लगातार दो बार नर या नारी चोला पहन सकती है, इसके बाद तो उसे नर या नारी चोला बदलना ही होगा।

साधना का आधार शरीर नहीं, आत्मा है

आध्यात्मिक साधना का आधार नर या नारी तन नहीं है। अध्यात्म तो आत्मा को जानने की पढ़ाई है। अध्यात्म की मूल शिक्षा तो यह है कि तुम अपने को नर या नारी न मानकर अर्थात् नर या नारी के तन के भान से परे जाकर मात्र एक आत्मा समझो। आत्मा रूप में न कोई नर है, न नारी। स्वयं परमात्मा पिता भी नर या नारी चोले से मुक्त एक दिव्य ज्योतिबिन्दु हैं, तो उनके सभी बच्चे भी दिव्य ज्योतिबिन्दु स्वरूप वाले ही हैं। शरीर तो मात्र सृष्टि-मंच पर अभिनय करने के लिए ड्रेस है। वास्तविक पुरुषार्थ तो यह है कि हम अभिनय की ड्रेस से न्यारे होकर अपने को नंगी आत्मा समझें पर गलती यह हुई कि आत्मा को नंगा करने की बजाय शरीर को नंगा रखना – साधना का आधार समझ लिया गया। इस प्रकार की साधना में नारी पीछे रह गई तो उसे साधना के अयोग्य सिद्ध कर दिया गया, कह दिया गया कि उसे मोक्ष नहीं मिलेगा। यह सरासर उसके प्रति झूठ है और उस उच्चतम योग्य को अयोग्य सिद्ध करने का अज्ञानजनित षड्यन्त्र है। ❖

प्रभु मिलन की वेला

ब्रह्माकुमार राजवीर, बड़ौत (उ.प्र.)

अपने बच्चों का दुख ना देख पाया है,
मिलने धरती पे भगवान आया है।

मिलन की प्यास बुझा लो,
खुदा को दोस्त बना लो।
बड़ी किस्मत से मौका हाथ आया है।।
मिलने धरती पे भगवान............

धक्के खाते रहे हम इधर से उधर,
अन्धेरे में कुछ भी ना आया नज़र।
उसने अन्धों को सज्जा बनाया है।।
मिलने धरती पे भगवान............

माया उंगली पे हमको नचाती रही,
देह की दुनिया में बुद्धि फँसाती रही।
उसके आने से घर भी याद आया है।।
मिलने धरती पे भगवान............

कभी सोचा न था ऐसे मिल जायेगा,
इतनी आसानी से हमको अपनायेगा।
छू के पत्थर को पारस बनाया है।।
मिलने धरती पे भगवान............

ये कलियुगी दुनिया तो गई कि गई,
जल्द आयेगी सतयुगी दुनिया वो नई।
शिवयोगेश्वर ने राजयोग सिखाया है।।
मिलने धरती पे भगवान............

वो कौन थे ?

ब्रह्माकुमार प्रताप सैनी, सीरी, पिलानी

मुझे पढ़ने का बहुत शौक रहता है खासकर आध्यात्मिक पुस्तकें। मैं आत्मा के बारे में तो ज्यादा नहीं जानता था परंतु जीवन को उत्तरोत्तर अच्छा बनाने के लिए हमेशा प्रयासरत रहता था। मैं एक संस्थान में पुस्तकालय में काम करता था। दिन भर अच्छी किताबें पढ़ता था। वहाँ से मेरा तबादला डाक विभाग में कर दिया गया परन्तु मैं जाना नहीं चाहता था क्योंकि मुझे पढ़ने का बहुत शौक है। तबादला रद्द करवाने के लिए मैं सम्बन्धित अधिकारियों से मिला, खूब मिन्नतें की पर कुछ नहीं हुआ। इसके बाद निदेशक से मिला, उन्होंने मुझे समझाया कि तुम ड्यूटी करो, परेशान होने की जरूरत नहीं है, यदि कोई समस्या आए तो मुझे बताना।

कूड़े में मिल गई ज्ञानामृत पत्रिका

आखिर मैंने डाक विभाग में ड्यूटी शुरू कर दी। जब कमरा देखा तो उसमें आदमी तो क्या जानवर भी बैठना पसंद न करें। मैंने झाडू उठाई और सफाई करने लगा। सफाई करते-करते ओमशांति मीडिया पत्रिका मेरे हाथ लगी। सारा काम छोड़कर उसे पढ़ने लगा। पढ़ते-पढ़ते इतना अभिभूत हो गया कि उसे डायरी में नोट करने लगा। जब भी मुझे फुर्सत मिलती, मैं यही करने लगा। फिर विचार आया कि इतना कब तक लिखूँगा, क्यों न यह पत्रिका ही मंगवा लूँ। साथ ही मुझे ज्ञानामृत पत्रिका भी कूड़े में मिल गयी। उसे पढ़कर मुझे और भी खुशी हुई। दूसरे दिन मैंने मनीऑर्डर कर दिया और थोड़े दिनों बाद मेरे पास पत्रिका आने लगी। कुछ दिन बाद मैंने सोचा कि जिस संस्थान की पत्रिका इतनी अच्छी है तो वो संस्थान तो कितना अच्छा होगा! मैंने माउंट आबू में फोन किया और उनसे स्थानीय सेवाकेन्द्र की जानकारी मिल गई। सेवाकेन्द्र पर फोन किया, तो निमित्त बहन ने कहा कि कभी भी आ जाना।

खुल गए ज्ञान-नेत्र

अगले दिन सायं 4 बजे सेवाकेन्द्र पर गया तो वहाँ ताला लगा मिला। सोचने लगा, अब क्या करूँ? मैं वापस जाने लगा, तभी एक सज्जन आए और कहा, भाई साहब, आप बिल्कुल सही जगह आ गये हो, अब यहाँ से बिना पूरा ज्ञान लिए जाना नहीं, कल आना, बहन कल जरूर मिलेगी। मैं दूसरे दिन गया और निमित्त बहन से बातचीत करके बहुत अच्छा लगा। उसी समय मैंने तय कर लिया कि मुझे भी इनके समान बनना है। फिर सात दिन के कोर्स के लिए समय तय कर लिया। ज्यों-ज्यों कोर्स आगे बढ़ता गया, मेरे ज्ञान रूपी नेत्र खुलते गये। जो भी संशय थे वे सभी निमित्त बहनों ने दूर कर दिये। मैं रोज मुरली सुनने जाने लगा। मैंने सोचा कि यह ज्ञान अन्य भाई-बहनों को भी मिलना चाहिए इसलिए अपने संस्थान के कालोनी परिसर में सात दिनों के कोर्स का भी आयोजन कराया।

काया पलट करने वाले बाबा ही हैं

मैं बाबा का बच्चा बन गया परंतु जो सज्जन मुझे पहले दिन मिले थे वे फिर कभी नहीं मिले। सात महीने बाद एक दिन मैंने बहनों से इस बारे में पूछा तथा उनका हुलिया व उम्र बताई। बहनों ने कहा, ऐसा आदमी तो हमारे सेवाकेन्द्र में नहीं आता है। मैं सोचता रहता हूँ कि वो कौन थे। यदि वो सज्जन मुझे सेवाकेन्द्र पर नहीं मिलते तथा दूसरे दिन आने के लिए नहीं कहते तो शायद मैं डगमगा जाता और दूसरे दिन नहीं आता परंतु उनके कहने से ही दूसरे दिन गया और क्या से क्या हो गया। मेरी तो काया ही पलट हो गयी। मेरा चाल-चलन और नजरिया ही बदल गया। मेरी पत्नी व लड़का भी ज्ञान से जुड़े हुए हैं। घर में एकदम शांत वातावरण रहता है। मैं समझता हूँ कि मेरी काया पलट करने वाले बाबा ही हैं। कहाँ तो मैं तबादला रुकवाने के लिए रो रहा था और अब यह सोच रहा हूँ कि तबादला पहले क्यों नहीं हुआ, देर से क्यों हुआ? अब मुझे यह पक्का यकीन हो गया है कि वो बाबा द्वारा निमित्त बना कोई फरिश्ता ही था जो मुझे प्रेरित करने आया था। भगवान जो भी करते हैं अच्छे के लिए ही करते हैं। मुझे यह भी यकीन हो गया है कि मैं आज जो भी हूँ, मेरे पूर्वजन्मों के कर्म फल से हूँ तथा वर्तमान में अच्छे कर्म करके पुन: भाग्य बना रहा हूँ। अब कोई भी बुरी परिस्थिति आती है तो मैं बिलकुल भी विचलित नहीं होता हूँ। बाबा ने मुझे अचल-अडोल बना दिया है। वाह! मेरे बाबा वाह! आपने तो कमाल कर दिया। ❖

स्वर्णिम भाग्य से मुलाकात

अनुपम है यह कृति, निराला है इसका आंचल
अनोखी है इसकी रीति, दिव्य गुण इसका आभूषण
ऐसे अनूठे भाग्य की सुन लो पुकार
जो कर रहा है आपका इन्तज़ार

आप लोग सोच रहे होंगे कि आखिर हम किस भाग्य की बात कर रहे हैं। ये वो भाग्य है, जो एक कुमारी को स्वयं की सुरक्षा का कवच प्रदान करता है। आज हर माँ-बाप अपने बच्चों के भाग्य को तराशने की कोशिश करते हैं, पर चाहते हुए भी कई कारणों से स्वयं को असमर्थ पाते हैं। अक्सर माँ-बाप अपने बच्चों को शिक्षा/प्रशिक्षण के लिए देश-विदेश के किसी छात्रावास में भेज तो देते हैं पर अधिकतर, अपने सपनों के विपरीत ही परिणाम पाते हैं।

आज हम आपको ऐसे कन्या छात्रावास के बारे में बताने जा रहे हैं, जो अद्‌भुत भाग्य से आपकी मुलाकात करायेगा, वो है **शक्ति-निकेतन** जो भारत भूमि की हृदयस्थली कहलाने वाले राज्य मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक, गौरवशाली, सांस्कृतिक नगर इन्दौर के न्यू पलासिया क्षेत्र में स्थित है। तो चलिये, शक्ति-निकेतन के रूहानी आशियाने की ताकत व खूबियों से रूबरू होते हैं.....

संस्कार परिवर्तन का ज़रिया महान्
ये है सत्य-ईमान का दरिया आलिशान
गुणों व शक्तियों की ये है खदान
ख़ुदा भी है इस खदान पर मेहरबान
उमंग-उत्साह है इसकी असली पहचान
सफलता की बुलंदी छूना है इसका अरमान

शक्ति-निकेतन एक ऐसा दरिया है जिसके ज़रिये हर कुमारी अपने आपको सर्व ख़जानों से सम्पन्न बना लेती है। उनमें सहन करने, सामना करने के साथ-साथ अन्य शक्तियाँ भी विकसित हो जाती हैं जो उन्हें भावी जीवन में बहुत काम आती हैं। लौकिक-अलौकिक पढ़ाई में सन्तुलन रखते हुए वक्त को अपनी बाज़ुओं में बांध लेती हैं और अपने सब काम बेहतरीन तरीके से कर लेती हैं। आवासीय कला, साफ-सफाई, सिलाई, कढ़ाई-बुनाई, गृह-सज्जा, पेंटिग, दूरभाष, स्वागत-प्रबंध, मेहमान-नवाज़ी, सांस्कृतिक कला, संगीत कला, नृत्य कला, गायन-वादन, अभिनय, निबंध, भाषण, वाद-विवाद आदि कलाओं में ये दक्ष बन जाती हैं। अत: इनका जीवन पूर्णरूपेण स्वावलम्बी बन जाता है, जो इनकी असल ज़िंदगी का दर्पण ही तो है।

यह छात्रावास देश-विदेश के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। कक्षा 6वीं से कॉलेज स्तर (बी.कॉम/बी. ए.) की शैक्षणिक सुविधाएं प्रदान करने वाला यह शक्ति-निकेतन दिन दोगुनी, रात चौगुनी प्रगति पर है। वर्तमान समय इस छात्रावास में भारत के प्रमुख प्रांतों – दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, आसाम, उड़ीसा, मणिपुर, गोआ, राजस्थान, केरल, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब के अतिरिक्त नेपाल, दुबई आदि विदेशों की लगभग 150 कन्याएं निवास करती हैं। यहाँ कन्याएं एक-दूसरे को सहयोग देकर तथा गुण-विशेषताओं से सीख लेकर स्वयं को ज्ञान, योग, सेवा, सत्यता, ईमानदारी, वफादारी, अनुशासन एवं एकता जैसे अनेक गुणों से सुसज्जित कर लेती हैं। आज जहाँ मोबाइल, फेसबुक, वॉट्स-अप और इन्टरनेट के बिना जीवन नहीं है, वहाँ ये कन्यायें ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए दुनिया के आकर्षणों से परे रह, अपने जीवन को सुचारू रूप से चलाना सीख लेती हैं।

इस अद्वितीय छात्रावास की दिनचर्या का संचालन बड़ी ही अलौकिक विधि से होता है, जो इस प्रकार है-

- कन्यायें यहाँ प्रात: 4 बजे से उठकर राजयोग का अभ्यास करती हैं एवं आध्यात्मिक ज्ञान का श्रवण करती

हैं, जिससे इनका मन पवित्र बनने लगता है, तदुपरान्त शुद्ध व सात्विक विचारों को लिये आगे की दिनचर्या की शुरुआत करती हैं।

● आध्यात्मिक शिक्षा के बाद लौकिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए स्कूल, कॉलेज जाती हैं, वापस लौटने पर वे निजी व नित्य कार्य करती हैं एवं यज्ञ-सेवा करती हैं।

● इसके पश्चात् सायं 3:30 से 5:00 बजे तक अपनी लौकिक पढ़ाई करती हैं।

● सायं 6:30 से 7:30 वे संगठित होकर योगाभ्यास करती हैं, तब वातावरण शक्तिशाली एवं फ़रिश्तों की महफ़िल के समान अलौकिक प्रतीत होता है।

● यह दैनिक क्रम ही इन कन्याओं के भावी जीवन के निर्माण में, मूल्यवान विचारों का बीजारोपण करता है। यहाँ की सारी प्रक्रिया परमात्मा की याद में चलती है। छात्राएँ, जो यहाँ निवास करती हैं, अपने को परम सौभाग्यशाली अनुभव करती ही हैं, छात्राओं के अभिभावक एवम् यहाँ आने वाले अतिथिजन भी स्वयं को धन्य महसूस करते हुए प्रफुल्लित होकर कह उठते हैं – यह छात्रावास अद्‌भुत, अलौकिक, परम सौभाग्यशाली है।

सभी अभिभावकों से अनुरोध है कि समय को पहचानें और अपनी कुमारियों की स्वर्णिम भाग्य से मुलाकात कराएँ...

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें :-

बी.के. करुणा, शक्ति-निकेतन, ओम् शान्ति भवन, न्यू पलासिया, इन्दौर (मध्य प्रदेश) - 452001

फोन : 0731-2531631 मो. 09425316843, 09425903328

ईमेल : shaktiniketan@gmail.com

नोट : शक्ति-निकेतन में कन्याओं के प्रवेश हेतु फरवरी माह से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रवेश की प्रक्रिया मई, जून माह में प्रारंभ हो जाती है। ❖

बच्चा गुलाब की तरह खिलता गया

ब्रह्माकुमारी अर्चना देशपाण्डे, मालेगाँव (महाराष्ट्र)

ज्ञान में जब नये-नये थे तब हम सभी को बाबा के प्रति बहुत लगन थी और मुरली में बीच-बीच में आता था कि अंत का समय है, विश्व परिवर्तन नजदीक है तो सभी बड़ी तीव्रता से पुरुषार्थ में लग गये। उस समय मेरा बच्चा ढाई साल का था, हर घड़ी उसे किसी न किसी के साथ खेलना होता था। उसको लगता था कि हर कोई सिर्फ मेरी ही तरफ ध्यान दे। हालांकि सब थोड़ा-थोड़ा समय देते थे लेकिन पुरुषार्थ में ज्यादा मगन थे। मैं दिन भर बच्चे के पीछे रहती थी। यहाँ तक कि रविवार को भी मुझे ही उसको बाहर लेकर जाना पड़ता था, घुमाना पड़ता था। घर में सब बाबा की पढ़ाई में तल्लीन थे। इतना करने के बाद भी जब बच्चा मुरझाया-सा रहता था तो एक दिन योग में सवेरे बाबा के आगे मैंने मेरी चिंता प्रकट की और कहा कि बाबा, आप ही मेरे लिये सब कुछ हो, आपसे ही मैं अधिकार से सब कुछ माँग सकती हूँ, तो आप ही आज से बच्चे को संभालो और उसकी तरफ ध्यान दो। उसी समय मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि ऊपर से एक प्रकाश का फव्वारा आ रहा है और सोए हुए बच्चे को पूरी तरह से कवर कर रहा है। लगभग 3-4 मिनट तक बच्चा उस फव्वारे में रहा और मुझे महसूस हुआ कि बाबा कह रहे हैं, तुम इसकी चिंता छोड़ो, अब से यह बच्चा मेरा है।

उसके बाद मेरा टेन्शन तो कम हुआ ही लेकिन मेरे युगल, माताजी (सास) सभी उसकी तरफ ध्यान देने लगे। मैं भी अपने को मात्र निमित्त समझने लगी मानो यह बच्चा बाबा का है, बाबा ने सिर्फ मुझे निमित्त बनाया है और देखते-ही-देखते घर का माहौल बदल गया। हर कोई उसकी तरफ ध्यान देने लगा और बेटा भी गुलाब के फूल की तरह खिलता गया। उसकी तबीयत भी सुधरने लगी। अभी वह 9साल का है और उसे बाबा के प्रति बहुत ही लगन है। यहाँ तक कि उसे भी नित्य बाबा के छोटे-छोटे अनुभव होते हैं और चार बार बाबा को मिल आया है। ❖

दिसंबर, 2015 अंक से आगे ...

मानव जीवन में धन की उपयोगिता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

यह कहना कि पैसा ही सभी फसादों का कारण है, सही नहीं है। वास्तव में पैसे से प्यार होना फसाद का कारण है। धन के संबंध में कुछ बातें ध्यान देने योग्य हैं –

1. आज का मानुष, धनुष के समान है। गरीब के पास तरकश (पर्स या जेब) तो है परन्तु तीर (धन) नहीं हैं। धनी के पास तीर बेहिसाब हैं परन्तु तरकश बड़ा विशाल है, कभी भरता ही नहीं।

2. जिसे धन से प्यार होता है उसे विद्या से प्यार नहीं होता। विद्यार्थी (विद्या+अर्थी) बनने के लिए विद्या से प्यार हो, अर्थी (शरीर) से नहीं।

3. पवित्र धन बढ़ता भी है और सुरक्षा भी देता है परन्तु अपवित्र धन घटता-बढ़ता रहता है और नाश का कारण बनता है। पहले में शक्ति है और दूसरे में आसक्ति।

4.थोड़ा धन यदि शान्ति प्रदान करता है तो यह उस ज्यादा धन से अच्छा है, जो अशान्ति प्रदान करता है।

5. धन से गरीबी को सहजता से दूर किया जा सकता है परन्तु आत्मिक गुणों के करीबी नहीं हुआ जा सकता। आज मनुष्य गरीबी व अपराधों के बीच जीने के इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि वे इस बात की कल्पना भी नहीं कर पाते कि गरीबी व विकारों से रहित भी कोई युग था और जल्दी ही वह युग पुनः आने वाला है।

6. जीवन की दो आवश्यकताएँ हैं, शरीर को चाहिए रोटी, कपड़ा और मकान जबकि आत्मा को चाहिएँ ज्ञान, गुण व शक्तियां। आवश्यकताएँ यदि असीमित न बनें तो ज्ञानवान, गुणवान व शक्तिवान बना जा सकता है।

7. कर्ज, उधार, संग्रह, उपभोग, उपयोग और दान, धन की ये छः गतियां हैं।

ट्रस्टी भाव से धन का प्रयोग करें

धन के प्रति मनुष्य का क्या भाव होना चाहिए? ट्रस्टी का। धन का उपयोग इस प्रकार से करना चाहिए जैसे कि किसी की धरोहर को उसके कहे अनुसार व्यय कर रहा हूँ। बैंक का कैशियर करोड़ों रुपयों का लेन-देन करता है परन्तु साक्षी भाव से बैंक के नियमों के अनुसार। उसी प्रकार मनुष्य प्राप्त धन का उपयोग साक्षी भाव से जीवन के नियमों के अनुसार करे। यह भावना हो कि मैं प्रकृति के दिये देह रूपी रथ में रहता हूँ, मैं भगवान का दिया भोजन करता हूं, वस्त्र पहनता हूं और भगवान की देखरेख में ही समस्त कार्य करता हूँ। प्रतिमाह प्राप्त आमदनी को भगवान की सौगात समझ कर उसका उपयोग भगवान की स्मृति में रहते हुए करना चाहिए। आमदनी का कम से कम 10 प्रतिशत भगवान के कार्य में समर्पित करना चाहिये और बाकी को ट्रस्टी हो कर व्यय करना चाहिये। रसोई के लिए यदि 100 रुपये की सब्जी भी खरीदनी हो, तो शिव बाबा का स्मरण करते हुए जेब से रुपये इस भाव से निकालने चाहिएँ कि बाबा, भोजन बनाने के लिए आपसे 100 रुपये ले रहा हूँ। घर में जिस भी स्थान पर पैसे रखे जाते हैं उसे शिव बाबा की भण्डारी समझने से कभी भी गलत पदार्थ का क्रय नहीं होगा। ऐसा भी अनुभव होगा कि बाबा की भण्डारी में मानो रुपये कभी खत्म ही नहीं होते।

तेरह पर अटक कर भाव-विभोर हो गए

गुरुनानक देव जी एक बार माला फेरते हुए दानों की गिनती करते जा रहे थे। आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह, तेरह-तेरा-तेरा-तेरा और वे तेरह पर अटक कर भाव-विभोर हो गये। परमात्मा को याद करते हुए बोल उठे कि

सब कुछ तेरा, मेरा कुछ नहीं परन्तु उनकी इस शिक्षा को कि सब कुछ ऊपर वाले पर अर्पण कर दो, भक्तों को अमल करना मुश्किल हो गया। फिर इस तेरा या तेरह से बचाव का रास्ता ढूंढ़ लिया गया। जो तेरह नंबर परमात्मा को तेरा के रूप में अर्पित था, उसे ही अनलक्की-थर्टीन कह कर अशुभ घोषित कर दिया गया। अब हाल यह है कि चाहे मकान नंबर हो, होटल का कमरा नंबर हो या किसी पार्टी में टेबल नंबर, तेरह का नंबर रखा ही नहीं जाता, 12 नंबर के बाद सीधे 14 नंबर कर दिया जाता है या 12-ए व 12-बी के बाद 14 नंबर आ जाता है। आज धन के सन्दर्भ में मेरा कहने का चलन है, तेरा कहने की भावना ही खत्म हो गई है। 'मेरा' कहने वाला मैला हो जाता है। धन हो या मान-सम्मान, मनुष्य लेवता हो गये हैं। गरीब व्यक्ति में दान देने की भावना, अमीर से बहुत ज्यादा होती है और उसे उसकी भावना का पूरा-पूरा भाड़ा भविष्य में मिलता है। तो ना देने की भावना वाले को, जो समाज व प्रकृति से सारे जीवन लेता रहता है, कुछ दण्ड भी ज़रूर पड़ता होगा।

सर्व से प्रेम, ईश्वरीय प्रेम को खींचता है

आज के समय की कहावत है कि पैसा खुदा तो नहीं पर खुदा की कसम, खुदा से कम भी नहीं परन्तु तीर्थ स्थलों पर पैसा चढ़ाने वाले भक्तों की भीड़ के लिए यह कहावत होनी चाहिए कि खुदा पैसा लेता तो नहीं पर खुदा की कसम, खुदा पैसे से मिलता भी नहीं। एक कहावत और भी है कि पैसा, पैसे को खींचता है। यदि यह सही है, तो मनुष्यों को यह भी समझना चाहिए कि सर्व से प्रेम, ईश्वरीय प्रेम को खींचता है। सर्व से प्रेम यदि होगा तो अतिरिक्त धन जरूरतमंदों के कल्याण के लिए भी खर्च किया जायेगा। एक कहावत यह भी है कि बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया। आज के संदर्भ में 'काम पड़ा तो भैया, हर काम करे रुपैया' अर्थात् किसी से काम कराना हो तो उसे भैया कहो या उसे रुपैया दो। आज हर व्यक्ति निन्यानवे के फेर में लगा है और उस एक ('शिव') के फेर में बिरला कोई दिख पड़ता है क्योंकि हर किसी को नगद नारायण चाहिए, लक्ष्मी-नारायण नहीं। आज ऐसा कोई नहीं जो धन की कामना न रखता हो। एक पुरानी कहावत है कि मरणासन्न व्यक्ति भी यदि धन बंटता देख ले तो वह उसे पाने के लिए उठ खड़ा होगा अर्थात् वित्तेष्णा से ग्रस्त मनुष्य, ईश्वरीय-स्मृति में देह त्यागने की बजाय माया से ठगे जाने को प्रवृत्त होता है।

ईमान का बिकना अर्थात् आत्मा का बिकना

कहावत है कि धन अच्छा सेवक है परन्तु बुरा स्वामी है अर्थात् धन का अच्छे कार्य में इस्तेमाल उसे सेवक बनाता है और धन का मात्र संचय करना उसे बुरा स्वामी बना देता है क्योंकि धन मालिक बन कर अपना विस्तार करवाता रहता है। धन की शक्ति से बड़े-बड़े जज, पुलिस-कर्मी, आयकर अधिकारी, नेता, मंत्री आदि बिक जाते हैं। यहां तक कि दूल्हा भी बिकता है। देखा जाये तो इसमें धन का दोष नहीं, यह तो जड़ है, दोष है मनुष्य के धर्म-ईमान का, जोकि अधम-बेईमान हो गया है। ईमान का बिकना अर्थात् आत्मा का बिकना। कलियुगी बाज़ार में अगर सबसे सस्ती कोई चीज है, तो वह है आत्मा। शरीर के लिए आत्मा नहीं है अपितु आत्मा के लिए शरीर है। आत्मा का साधन होने में ही शरीर का स्वास्थ्य है। चूंकि शरीर का साधन आत्मा हो गई है अत: आत्मा में विकारों की बाहूल्यता और शरीर में व्याधियों की प्रचुरता हो गई है।

धन सीमित – प्रेम ज्यादा

धन व अतिथि में उल्टा सम्बन्ध है। धन मुश्किल से आता है और जाने में देर नहीं करता परन्तु अतिथि सहजता से कभी भी आ जाता है और आ कर जाने का नाम नहीं लेता। धन यदि छिपा कर न रखा जाए तो बढ़ता जाता है परन्तु अतिथि यदि जाने की तिथि छिपाए तो उसका मान घटता जाता है। कहावत भी है कि मछली व अतिथि घर में आने के बाद तीसरे दिन बदबू देने लगते हैं अर्थात् मेजबान को भारी लगने लगते हैं। जिस घर में धन ज्यादा है वहां प्रेम कम होता है और अतिथि की सेवा नौकर करते हैं परन्तु

जिस घर में धन सीमित मात्रा में है वहां प्रेम ज्यादा होता है और अतिथि की सेवा घर वाले करते हैं। धन से भरपूर घर, होटल से समानता रखता है और सीमित धन वाला घर मन्दिर से समानता रखता है। धनी के बच्चों में आतिथ्य भावना कम होती है जबकि मध्यम वर्गीय परिवार के बच्चे अतिथि का समुचित सत्कार करते हैं।

ज्ञान-धन मिलता है नसीब वालों को

धन की प्रचुरता से घर-परिवार अक्सर टूट कर बिखर जाते हैं जबकि धन का अभाव परिवार को एकजुट व संगठित रखता है। धन की प्रचुरता परिवार में बुराइयां व संस्कारों में विकृति लाती है जबकि धन की अल्पता परिवार में प्रेम व भाईचारा बनाए रखती है। मां-बाप व बच्चे मितव्ययता बरतते हैं और धन की कमी को आपसी त्याग व प्रेम से पूरा करते हैं। धन की प्रचुरता अध्यात्मिक ज्ञान से दूर रखती है जबकि धन की अल्पता मनुष्य को ज्ञान-धन की तरफ आकर्षित करती है। धन की कमी को शारीरिक मेहनत से दूर किया जा सकता है परन्तु ज्ञान की कमी को न तो धन से दूर किया जा सकता और ना ही शारीरिक मेहनत से। ज्ञान-धन तो बड़े भाग्य से नसीब वालों को ही प्राप्त होता है। यह अलग बात है कि अधिकतर बदनसीब मनुष्य खुद ही ज्ञान-धन को अस्वीकार कर देते हैं। उन्हें अभागा भी कहा जा सकता है अर्थात् जिसके भाग्य में न हो या जो कभी ज्ञान-धन के पीछे ना भागा हो।

दो प्रकार के मनुष्य

स्थूल धन के पीछे भागने वाले दो प्रकार के मनुष्य हैं, धन की दिशा में भागने वाले और धन के विपरीत दिशा में भागने वाले। दोनों की दौड़ का केन्द्रबिन्दु धन है। विचित्र बात यह है कि पहला मनुष्य अभी भी व कभी भी अपने को धन से दूर पाता है व दूसरा मनुष्य यदि प्रतिभावान है, तो कभी भी धन से दूर नहीं जा पाता क्योंकि धन उसके पीछे (ख्यातिवश) भागने लगता है। सुसंस्कारों से प्रतिभा, प्रतिभा से सफलता, सफलता से ख्याति और ख्याति से धन प्राप्त होता है। धन विख्यात का पीछा करता है जबकि कुख्यात धन का पीछा करता है। विख्यात के पीछे उसके चाहने वाले भागते हैं और कुख्यात के पीछे पुलिस भागती है। विख्यात गणितज्ञ यूक्लिड से किसी शिष्य ने ज्यामिति (Geometry) पढ़ना शुरू किया। दूसरे दिन जब यूक्लिड उसे एक प्रमेय (Theorem) पढ़ा रहे थे तो शिष्य ने पूछा, 'इस प्रमेय को पढ़ने से मुझे क्या लाभ होगा?' इस पर यूक्लिड ने अपने सहयोगी से कहा कि 'इसे एक ओबेल (यूनानी सिक्का) दे दो क्योंकि यह शिक्षा से ज्यादा धन कमाने में रुचि रखता है।' यह सुन कर शिष्य ने लज्जा से चरणों में झुक कर माफी मांग ली। ज्ञान को स्थूल धन में परिवर्तित करने की मंशा बड़ा अज्ञान है जबकि ज्ञान व स्थूल धन के दान से सूक्ष्म अविनाशी भाग्य बनाना एक ज्ञानी की पहचान है।

हर मनुष्य एक आत्मा ही तो है जो नजर नहीं आती

एक समय था जब इस धरा पर दिव्य-गुणों व सतोप्रधान प्रकृति का राज्य था। फिर गिरावट आने पर समाज में कुछ नियम-कानून बनाये गये और कानून का राज्य चला। आज स्थिति यह है कि कानून निर्धनों पर शासन करता है और धनी कानून पर। किसी भी देश की मुद्रा एक शक्ति है जिसमें कि किसी भी स्थूल पदार्थ को क्रय करने का गुण होता है। यह मुद्रा श्रम व स्वर्ण का परिवर्तित, सघन या घनीभूत रूप है। कोई भी देश उतनी ही मुद्रा जारी करता है जितनी उत्पादकता (Productivity) उसने श्रम से हासिल कर ली है या फिर जितने मूल्य का उसका स्वर्ण भंडार है। मुद्रा चाहे रुपया हो या डॉलर, कागज के इन विशेष टुकड़ों में एक क्रय-शक्ति ही तो है, जो नजर नहीं आती। उसी प्रकार मनुष्य चाहे भारतीय हो, अमेरिकी हो या जापानी, वह एक आत्मा ही तो है, जो नजर नहीं आती। मनुष्य जड़ रुपयों में समाई अदृश्य शक्ति को तो स्वीकार करते हैं परन्तु शरीर को चलाने वाली चैतन्य शक्ति को स्वीकारने में मूंझ जाते हैं। **(क्रमशः)**

भगवान ने अपनों से मिलवाया

ब्रह्माकुमारी शांताबाई पवार, धारवाड़ (कर्नाटक)

यह 8-9 साल पहले की बात है। मेरा बेटा शिवाजी जिस कॉलेज में पढ़ता था, उसी कॉलेज में उसके एक वरिष्ठ प्रोफेसर परिवार सहित ईश्वरीय ज्ञान में चलते थे। कॉलेज में समय मिलने पर वे मेरे बेटे को शिवबाबा के ज्ञान की बातें सुनाते थे। बेटा धीरे-धीरे उस तरफ आकर्षित हुआ और मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) सुनने हर रोज सेवाकेन्द्र पर जाने लगा। थोड़े दिनों के बाद मुझे भी शिवबाबा का ज्ञान अच्छा लगने लगा। मैं भी उसके साथ सेवाकेन्द्र पर मुरली सुनने जाने लगी। मन को बहुत शांति मिलने लगी। फिर दैवी परिवार के साथ मधुबन (आबू पर्वत) आना हुआ। शिवबाबा से मिलन मनाया, बहुत आनंद आया। इस सौभाग्य का जितना वर्णन करूँ, कम है।

बाबा मिलन के बाद, पूर्व बनायी योजना के अनुसार, मधुबन से हम 200 भाई-बहनें चार बसों में दिल्ली, हरिद्वार, ऋषिकेश और आगरा आदि घूमने चले। हरिद्वार में, शाम चार बजे पास के गाँव के पहाड़ पर मनसा देवी मंदिर में जाना तय किया। वहाँ टिकट लेकर उड़नखटोले (Rope Way) द्वारा जाना पड़ता है।

रिक्शाचालक बिना पैसे लिए चला गया

मैं ग्रुप से थोड़ा पीछे रह गई थी, सभी भाई-बहनें जा चुके थे। मेरे साथ उड़नखटोले में जाने के लिए कोई नहीं था। वो ऊपर मुझे मिलेंगे, यह सोचकर मैं अकेली ऊपर मंदिर चली गयी। तब तक वे सब वापिस नीचे आ गए थे। मैंने सोचा, चलो नीचे मिलेंगे। नीचे आकर इधर-उधर देखा तो कोई नहीं मिला, मैं घबरा गई। अंधेरा छा रहा था। हाथ-पाँव काँपने लगे। नई जगह, नये लोग, न भाषा आती, न बस पार्किंक का पता। उस वक्त बाबा की मुरली का महावाक्य याद आया, ''बच्चे, दिल से मुझे याद करो, हाजिर हो जाऊँगा।'' मैंने बाबा से कहा, ''बाबा, मेरा बेटा तो अब मेरे साथ नहीं है। आप ही बच्चा बनकर मुझे राह दिखाओ।'' तभी मुझे इशारा मिला कि इस रास्ते पे चलो। बाबा को याद करते-करते चली। रास्ते में एक साइकिल रिक्शा में बैठकर अंदाज से एक जगह से दूसरी जगह, वहाँ से और एक जगह, ऐसे ही बाबा के इशारे प्रमाण ढूँढ़ने लगी। उस भाई ने मुझे डेढ़ घंटे तक घुमाया पर हमारी बस का पता नहीं चला। मैं अकेली बूढ़ी माता अब क्या करूँ, समझ में नहीं आया। एक चौराहे पर एक पुलिस वाले पर नज़र पड़ी, तुरंत रिक्शा रुकवाकर उससे बस पार्किंग के बारे में पूछा। उसे अंदाज था कि मनसा देवी मंदिर में आने वाले यात्री बसों की कहाँ पार्किंग करते हैं। उसने मुझे रिक्शे से उतरवाया और रिक्शाचालक को जाने को कहा। रिक्शे वाला भाई पैसे लिए बगैर चला गया। उसने रास्ते में बताया था कि 200 रुपये किराया हुआ है। मेरे पास सिर्फ पाँच रुपये थे। अजब बात हुई। बाबा का ही इशारा हुआ होगा उसे पैसे न लेने का।

बाद में पुलिस वाले ने एक जीप में बिठाया और ड्राइवर को उतारने की जगह बतायी। रास्ते में नदी में एक बड़ी मूर्ति पर नजर पड़ी। उस पर बहुत रोशनी पड़ रही थी। मुझे अब पक्का हुआ कि यहीं कहीं आसपास हमारी बसों की पार्किंग हुई है। जीप के ड्राइवर को अब ठीक जगह मैंने बता दी। उसने पार्किंग की जगह पर मुझे उतार दिया। मैंने पाँच रुपये दिए, वह भी चुपचाप चला गया। वहाँ अपनी बसें और अपने भाई-बहनों को देखकर जान में जान आयी। उन सबको बाबा ने मेरे आने तक रोके रखा था। यही तो बाबा का कमाल है। इस प्रकार बाबा ने रास्ता दिखाकर अपनों से मिलवाया। धन्य है बाबा की जादूगरी! धन्यवाद बाबा, धन्यवाद! ❖

जरूरी है नींद

ब्रह्माकुमार ताराचंद, पाल्हावास (रेवाड़ी)

स्वस्थ व्यक्ति को निश्चित घंटों तक सोना बहुत आवश्यक है। एक स्वस्थ युवा को छह से आठ घंटे सोना चाहिए। शारीरिक एवं मानसिक तरो-ताजगी के लिए नींद बहुत जरूरी है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त नींद लेने की सभी सलाह देते हैं लेकिन नींद के नाज-नखरों से आज सारी दुनिया परेशान है। किसी को नींद कम आती है, किसी को अधिक आती है और किसी को नींद आती ही नहीं है। नींद नहीं आने से रोजाना के कार्यों में समस्याएँ पैदा होती हैं। किसी काम को करने की इच्छा भी नहीं होती है। यदि काम करते हैं तो ज्यादा गलतियाँ होती हैं। अनिद्रा से बीमार भी हो सकते हैं और मानसिक समस्याएँ भी हो सकती हैं। नींद नहीं आने से वाहन दुर्घटनाएँ भी होती हैं।

नींद न आने का कारण – तनाव और चिन्ता

परेशान व्यक्ति नींद लाने वाली गोलियों का प्रयोग करते हैं और इनके आदी हो जाते हैं। बावजूद इसके उन्हें ठीक प्रकार से नींद नहीं आती है। नींद न आने के पीछे अनेक कारण ज़िम्मेदार हैं किन्तु कुछ मानसिक कारण हैं जैसे – डिप्रेशन या हताशा, घबराहट एवं तनाव व चिन्ता। इसके अतिरिक्त कुछ शारीरिक कारण भी हैं जैसे – हृदय रोग, श्वास रोग, मधुमेह, कैंसर तथा अचानक श्वास का रुक जाना। इनमें मुख्य कारण तनाव और चिन्ता हैं क्योंकि आज की दुनिया को तनाव व चिन्ता ने ज्यादा घेर रखा है। मानव मन उलझा रहता है परिणामस्वरूप, व्यक्ति की आँखों से नींद बहुत दूर चली जाती है। रात करवटें बदलने में निकल जाती है। इसके अतिरिक्त सोने में अनियमितता, बहुत ज्यादा सर्दी, बहुत ज्यादा गर्मी तथा दिन में सोने से भी रात को नींद नहीं आती है। नींद न आने के कारणों का समाधान करना चाहिए।

नींद लाने के उपाय

सोने के कमरे का वातावरण समान हो, न अधिक ठंडा, न अधिक गर्म, रोजाना कुछ न कुछ श्रम या व्यायाम जरूर करें। सर्दियों व बरसात के दिनों में दिन में न सोयें। रात का भोजन सोने से दो घंटे पूर्व करें, कॉफी, चाय, एल्कोहल, चटपटे मसालेदार भोजन का सेवन सोने से पहले न करें, सोने का कमरा कोलाहलमय न हो। सायंकाल अति मानसिक व शारीरिक क्रियाएँ न करें। नींद आ रही हो तो तुरन्त सो जायें। सोने में नियमितता रखें। गर्मी के दिनों में हाथों से पंखा चलाते समय नींद आ जाती है। सोने से पूर्व स्नान करें या हाथ-पैर धोने से अच्छी नींद आती है। शिथिलीकरण करें, धीरे-धीरे श्वास लें, श्वास को रोकें और फिर धीरे-धीरे श्वास को बाहर निकालें। इस क्रिया को जितनी देर कर सकें, करें। इससे नींद अच्छी आती है। टी.वी.पर बहस या तनावयुक्त फिल्में व सीरियल्स न देखें, तनावमुक्त रहें। सोने से पहले एक गिलास पानी या हल्का गर्म दूध पीना भी नींद लाने में मदद करता है। अपनी जीवन शैली में बदलाव लाना जरूरी है। रात को जल्दी सोने व सुबह जल्दी उठने की आदत डालें। सोने से पहले हल्का संगीत सुनने से भी नींद अच्छी आती है। सभी के प्रति शुभ कामना व शुभ भावना रखें। अच्छी नींद के लिए मन का स्वस्थ होना बहुत जरूरी है, इसके लिए अपनी सोच को सकारात्मक बनाएँ। इसके अतिरिक्त व्यक्ति नींद को लाने के लिए स्वयं प्रयास कर सकता है।

राजयोग निद्रा लाने में सहायक

नींद लाने के लिए मेडिकेशन की जगह मेडिटेशन बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। मन को उसका लक्ष्य दिखाएँ ताकि मन इधर-उधर की चिन्ता न करे। मन को परमात्मा की याद में लगायें तो मानसिक उलझनों से दूर रह सकते हैं। यह रास्ता बहुत सरल है जिससे अन्दर बहुत-सी शक्तियाँ आ जाएँगी और नींद न आने की बीमारी सदा के लिए दूर हो जायेगी। हाँ, इसके लिए प्रभु से साफ व सच्चा रहना होगा। कहा गया है कि जिस मनुष्य का मन स्वस्थ है वही संसार में सबसे ज्यादा सुखी है। इससे तन की सभी बीमारियाँ बहुत दूर चली जायेंगी। बिना दवा व चिन्ता के बिस्तर पर लेटते ही नींद आ जाना भी भाग्यशाली व्यक्ति की निशानी है। ऐसा केवल राजयोग से ही सम्भव हो सकता है। मैडिटेशन की नि:शुल्क शिक्षा हेतु आप किसी भी निकटतम ब्रह्माकुमारी सेंटर से सम्पर्क कर सकते हैं। ❖

भ्रष्टाचार रूपी भस्मासुर

ब्रह्माकुमार नरेश, अहमदनगर

आज विश्व भर में भ्रष्टाचार का जाल फैला हुआ है। भ्रष्टाचार के नए-नए मामले सामने आते रहते हैं। भारत देश में भी बहुत बड़े-बड़े घोटाले सामने आये हैं। समाचार पत्रों द्वारा, न्यूज चैनलों द्वारा भ्रष्टाचार की खबरें सुनने एवं पढ़ने को मिलती रहती हैं।

भ्रष्टाचार की जड़ क्या है?

भ्रष्टाचार अर्थात् भ्रष्ट+आचार। भ्रष्ट के विरुद्ध श्रेष्ठ होता है। भ्रष्ट अर्थात् श्रेष्ठ धर्म और श्रेष्ठ कर्म को भूलकर देहअभिमान में आकर किया हुआ कर्म। आचार अर्थात् आचरण। मानवीय मूल्यों को भूलकर किया हुआ आचरण ही भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार का फल केवल दुख ही दुख है। भ्रष्टाचार की जड़ अंदर आत्मा में है। आत्मा के अंदर छिपे हुए पाँच विकार काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ही भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। इन विकारों से ही मनुष्यों की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। मिसाल के तौर पर लोभ के कारण ही मनुष्य धन के पीछे लगा हुआ है। इस एक विकार से जुड़े हुए भ्रष्टाचार की चर्चा आज सारे विश्व में हो रही है। अन्य विकार भी हैं जिनसे जुड़े मामलों से सारा विश्व ही पाप की अग्नि में जल रहा है।

पाँच विकारों का तांडव

1.काम विकार- गीता में कहा गया है, काम महाशत्रु है। इससे ही मनुष्य की आसुरी दृष्टि, वृत्ति बन गई है। मनुष्य वासना का शिकार हो गया है जिससे नारियों पर पापाचार, अत्याचार, बलात्कार हो रहे हैं। आज की नारी असुरक्षित महसूस कर रही है। काम विकार से मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। काम विकार भी भ्रष्टाचार का मुख्य कारण है।

2.क्रोध विकार- क्रोध भी महाशत्रु है। क्रोध से आत्मा की सारी शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं जिससे वह कमजोर हो जाती है। 'क्रोध से तो पानी के भरे हुए मटके भी सूख जाते हैं।' जहाँ क्रोध है वहाँ शान्ति ठहर नहीं सकती। ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, ये सब क्रोध के ही बाल-बच्चे हैं। क्रोध के कारण ही घर-घर में महाभारत हो रहा है और हिंसा को बढ़ावा मिल रहा है। क्रोध भी भ्रष्टाचार का मुख्य कारण है।

3.लोभ विकार- कहा जाता है, जहाँ लोभ है वहाँ इच्छाएँ कभी पूर्ण नहीं हो सकतीं। मनुष्य अपनी विनाशी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए सब कुछ बरबाद कर रहा है। सुख-शान्ति से दूर होता जा रहा है। भ्रष्टाचार भी लोभ विकार के कारण बढ़ रहा है। धन के लोभ में आकर ही मनुष्य सबकुछ होते हुए भी धन का संचय कर रहा है। इस कारण चोरी, लूटमार आदि बढ़ते जा रहे हैं। लोभ विकार से ही धन से सम्बन्धित भ्रष्टाचार बढ़ रहा है।

4.मोह विकार- मनुष्य मोह जाल में ऐसा फँस गया है जैसे मकड़ी अपने ही बिछाये हुए जाल में फँस जाती है। देह और देह के सम्बन्धियों में, वस्तु-वैभवों में मोह बढ़ता जा रहा है इस कारण मोहजनित भ्रष्टाचार भी बढ़ रहा है। सम्बन्धों में कड़वाहट और स्वार्थ भी बढ़ता जा रहा है।

5.अहंकार- अहंकार भी बड़ा शत्रु है। देह अहंकार के वश होकर मनुष्य हर बात का श्रेय स्वयं लेना चाहता है। वह नाम, मान, शान का भूखा हो गया है और इसे पाने के लिए वह किसी भी हद तक जाने को तैयार है।

इस तरह इन पाँचों विकारों का तांडव चल रहा है। सभी मनुष्य मात्र इनके इशारे से नाच रहे हैं। हर एक विकार एक-दो से बड़ा है। इन पाँचों विकारों को ही रावण कहा गया है, जो सभी के अंदर मौजूद है। जैसे रावण के एक शीश को काटो तो दूसरा आ जाता है ऐसे ही ये विकार मनुष्यों पर हावी हो गये हैं। हमें इस रावण रूपी देहअभिमान को जड़ से निकाल इसे सदा के लिए जलाना है। तभी भ्रष्टाचार पूरी तरह नष्ट हो सकेगा।

भ्रष्टाचार के रावण को जलाओ

प्यारे भाइयो और बहनो, रावण को पहचानो, यह केवल भारत का नहीं, सारे विश्व का दुश्मन है। अब इस रावण को जलाओ, तभी भ्रष्टाचार का अंत होगा।

भ्रष्टाचारी दुनिया का अंत कराने परमात्मा का अवतरण

इस भ्रष्टाचारी दुनिया में सब दुखी-अशान्त हैं। यहाँ अनेक मत-मतांतर हैं। मनुष्य आसुरी कृत्य कर रहा है। जुल्म बढ़ रहा है। दैवी संस्कृति का अस्त हो गया है। रोग और शोक बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे घोर कलियुग में गीता में कहे कथन अनुसार निराकार परमपिता शिव परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर भ्रष्टाचारी दुनिया का अंत करके श्रेष्ठाचारी दुनिया की स्थापना का कर्त्तव्य कर रहे हैं।

श्रेष्ठाचारी दुनिया का आगमन

निराकार परमपिता शिव परमात्मा द्वारा स्थापित श्रेष्ठाचारी दुनिया में श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का राज्य होगा। वे विश्व महाराजन कहलायेंगे। हर मनुष्य दैवी गुणों से संपन्न होगा। एक मत, एक राज्य, एक भाषा, एक धर्म, एक दैवी संस्कृति होगी। देवताओं का ही राज्य होगा। सौ प्रतिशत सुख, शान्ति, सम्पत्ति होगी। भ्रष्टाचार का नामोनिशान नहीं होगा। देवताओं के लिए गायन है, सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, सम्पूर्ण अहिंसक, मर्यादा पुरुषोत्तम। वहाँ हर नर-नारी को समान अधिकार होगा। ऐसी श्रेष्ठाचारी दुनिया में, सतयुग में चलने के लिए परमात्मा अभी हमें राजयोग सिखा रहे हैं। राजयोग की शिक्षा ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय में निशुल्क दी जाती है। ❖

‘पत्र’ संपादक के नाम

दिसंबर, 2015 के अंक में ‘आत्म स्वरूप की सतत स्मृति’ लेख काबिले तारीफ है। अपने को आत्मा समझकर जीना ही पवित्रता के मूल्यों को स्वरूप में लाना है। आत्मा का ज्ञान मात्र व्याख्या यानि सुनने, बोलने व सोचने तक न हो वरन ‘मैं आत्मा हूँ’ यह होकर जीना ही सच्चाई है।

– बसंत कुमार मोदी, दुर्ग (छ.ग.)

आदरणीय दादा रमेश जी,

ज्ञानामृत के दिसम्बर, 2015 अंक में ‘ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की जरूरत–25’ पढ़कर अत्यंत खुशी के साथ-साथ दुख भी हुआ। दुख इसलिए हुआ कि यह आपकी अंतिम कड़ी थी। प्रतिमाह आपके मार्गदर्शक एवं प्रेरणादायक लेख का मुझे बहुत इंतजार रहता है। आपसे नम्र निवेदन है कि शीघ्र ही एक अन्य प्रेरणादायक एवं ज्ञानवर्धक लेखमाला का आरंभ करें ताकि हमें यज्ञ के कारोबार एवं उसे चलाने वाले समस्त कुशल बुद्धिजीवियों के साथ-साथ अन्य जानकारियाँ भी मिल सकें।

इस लेखमाला के अंतिम लेख में आपने यह प्रश्न किया है कि आप अपने जीवन में बड़े कब बनेंगे? मेरा उत्तर है कि अभी से। अभी नहीं तो कभी नहीं। दिल से बहुत-बहुत धन्यवाद।

– ब्र.कु.प्रीति खत्री, मालवीया नगर, जयपुर (राजस्थान)

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान। मोबाइल: 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 वेबसाइट: www.ghrc-abu.com

फैक्स: (02974) 238570 ई-मेल: drmurlidharsharma@gmail.com

बाबा ने रात में जगाकर कहा कि आश्रम जाओ

डॉ.आर.पी.मिश्रा, एम.एस. नेत्र रोग विशेषज्ञ, रीवा (म.प्र.)

मैं विगत 25 वर्षों से ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सम्पर्क में हूँ। दो बार माउण्ट आबू जा चुका हूँ लेकिन संस्था के सत्य ईश्वरीय ज्ञान से पहचान न होने के कारण इसे मात्र सात्विक और अच्छी मानता था लेकिन इसकी शिक्षाओं से अपने को लाभान्वित नहीं कर पाता था। मैं आँखों का डॉक्टर होने के कारण मरीज़ों की लम्बी कतार और पैसे कमाने के लोभ के कारण व्यस्त रहता था।

परमात्मा से लगाई अर्जी

ब्रह्माकुमारी आश्रम के आयोजनों में श्रद्धानुसार सेवा करता रहा। संस्था के भाई-बहनों की नि:शुल्क चिकित्सा करता रहा परन्तु ईश्वरीय ज्ञान और ज्ञानदाता को न पहचान सका। हर साल समय निकाल कर भारत के सभी तीर्थस्थलों में गुरुओं के पास ईश्वर-दर्शन का लाभ लेने की विधि-विधान जानने व साधना करने जाता रहा। इस तरह उम्र के 7 दशक बीत गये परन्तु परमात्मा के साक्षात्कार का लाभ नहीं मिला। गरीबों की मदद करना, स्कूल खुलवाना व दान-पुण्य करना, ये सब मैंने जारी रखा और शेष सब कुछ ईश्वर के ही ऊपर छोड़ दिया। अचानक जीवन में बड़ी दुर्घटना घटित हो गई, मुझे लकवा मार गया और लगभग 4 वर्षों तक बिस्तर में पड़ा रहा। बिस्तर पर लेटे-लेटे जीने की आश छोड़ दी और अर्जी परमात्मा से लगा दी कि मुझे अत्यधिक दुख है, मैं आपका बच्चा हूँ, दुख-पीड़ा से मुक्ति दिलाने हेतु आप मुझे अब उठा लो।

प्रेरणा मिली

एक रात लगभग 2 बजे मुझे परमात्मा से प्रेरणा मिली कि आप रोज़ आश्रम जाया करो। मैं नींद से उठकर बैठ गया कि मुझे ऐसा कौन आकर बोल रहा है। फिर नींद ही नहीं आई। प्रात: 6 बजे रात की ड्रेस पहने धीरे-धीरे आश्रम पहुँच गया। बहन जी ने बहुत सम्मान-सत्कार व स्वागत किया, मैं भाव-विभोर हो गया कि मैं अपने खोए परिवार में आया हूँ जहाँ मेरे कई परिचित प्रोफेसर, डॉक्टर क्लास में आते हैं।

रोज मुरली सुनना शुरू किया

उस दिन से लेकर अब नियमित मुरली क्लास में जाना शुरू कर दिया है। आश्चर्य की बात यह हुई कि मेरे हाथों-पैरों में पुन: ईश्वरीय शक्ति से नवीन ऊर्जा का संचार होने लगा है। कष्टहर शिवबाबा की दुआओं और मुरली के जादू ने मुझे मजबूत बनाना शुरू कर दिया है। अब जीवन पूर्णत: आनन्दमय हो गया है। रोज मुरली क्लास में जाने के कारण अत्यधिक सुख प्राप्त होने लगा है और ईश्वरीय स्नेह की अनुभूति भी होने लगी है। अब मैंने 7 दिवसीय कोर्स भी कर लिया है जिससे ज्ञान के सारे गुह्य राज समझ में आ गये हैं। अब सोचता हूँ, काश! 25 वर्ष पहले यह ज्ञान मिल जाता तो मैं कितना मालामाल हो गया होता परन्तु ड्रामा की भावी समझकर सन्तुष्ट रहता हूँ।

अब मैं प्यारे बाबा की छत्रछाया में खुशी का जीवन जी रहा हूँ व सबसे नम्र निवेदन करता हूँ कि ईश्वरीय विश्व विद्यालय में जाकर 7 दिवसीय कोर्स करके मानव से देवता बनने का ज्ञान प्राप्त कर सर्व समस्याओं का हल नि:शुल्क प्राप्त करें। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा जो नि:स्वार्थ ज्ञान-योग की सेवा हो रही है उसका लाभ सम्पूर्ण मानव जाति को शीघ्र ले लेना चाहिए। इससे धरती के पाप-ताप-सन्ताप स्वत: मिट जाएँगे। ❖

'ज्ञानामृत' से मिली ज्ञान की राह

ब्रह्माकुमार रामधनी, चुनार

कलियुग समस्याओं, कष्टों और दुखों का युग है। हर मानव अतृप्त है और अशान्ति के सागर में डूबा हुआ है। इसका मुख्य कारण है दुर्गुणों का होना। अमानुषिक गुण ही मानव के शत्रु हैं। दूसरों को खुशी और सम्मान देने में एक मीठी अनुभूति होती है, ऐसा जीवन जीना अच्छा लगता है। मेरे अन्दर भी अज्ञानता के कारण क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, नफरत, वैर, विरोध आदि दुर्गुणों की कमी नहीं थी। लौकिक शिक्षा (एम.ए.पास) ग्रहण करने के बाद भी मेरे स्वभाव, संस्कार में कोई परिवर्तन नहीं आया जिस कारण दुखी एवं अशान्त था।

दो घन्टे में पढ़ गया पूरी ज्ञानामृत

मैं इन्डियन पेट्रो केमिकल्स लि. में सेल्स एन्ड कलेक्शन कर्मचारी हूँ। यू.पी., बिहार, आसाम, बंगाल, राजस्थान, गुजरात और नेपाल के बड़े शहरों में केमिकल्स की सप्लाई और पेमेंट के लिए जाना पड़ता है। एक दिन बस से काठमाण्डू जा रहा था, बगल की सीट पर बैठा दिल्ली का एक भाई बड़ी लगन से पत्रिका पढ़ रहा था जिसके मुखपृष्ठ पर ''ज्ञानामृत'' लिखा था। काफी समय के बाद जब पत्रिका पढ़ी गई तो उसने उसका गोला बना कर हाथ में ले लिया और खिड़की के बाहर के दृश्य देखने लगा। मैंने बड़ी ही विनम्रता से कहा, भाई साहब, क्या पढ़ने के लिए पत्रिका दे सकते हैं? भाई साहब ने कहा, हाँ-हाँ, बाबा की पत्रिका है, बहुत लोग पढ़ते हैं, लीजिए, आप भी पढ़िए। पत्रिका लेते ही मैंने सर्वप्रथम विषय सूची पढ़ी। बड़े ही अच्छे-अच्छे लेख थे। करीब दो घन्टे में पूरी ''ज्ञानामृत'' पढ़ गया, बड़ा अच्छा लगा। भाई साहब को पत्रिका वापस करते हुए पूछा, यह मासिक पत्रिका हर महीने कहाँ से प्राप्त हो सकेगी? भाई साहब ने बताया, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आश्रम हर शहर में हैं जिन्हें ओमशान्ति सेन्टर के नाम से भी लोग जानते हैं। आश्रम में प्रवेश नि:शुल्क है। जो भी भाई-बहनें इन केन्द्रों से ज्ञान प्राप्त करते हैं उन्हें किसी तरह का दुख-दर्द नहीं रहता, बड़ा ही निराला जीवन हो जाता है, स्वर्ग जैसे सुख-शान्ति का आनन्द प्रत्यक्ष रूप में पाते हैं। कोई कितना भी उलझन में हो, गफलत में हो, अंधेरे में हो, बाबा के ज्ञान और गुणों को धारण करने से नारकीय जीवन समाप्त हो जाता है, सही मार्ग प्राप्त कर लेता है, सारा जीवन खुशहाल हो जाता है, निर्मल दृष्टि से वरदान प्राप्त होते हैं और स्नेह की शक्ति से सबका कल्याण होता है।

''बाबा'' कौन हैं?

मैंने पूछा, भाई साहब, यह बाबा कौन हैं जिनके एक से बढ़कर एक कमाल आप बता रहे हैं, कुछ उन के बारे में बताइए? भाई साहब ने कहा, परमपिता परमात्मा शिव को ''बाबा'' के नाम से जाना जाता है और वे ब्रह्मा बाबा (पूर्व नाम दादा लेखराज) के तन में प्रवेश करके, उनके मुख का आधार लेकर ज्ञान, गुण और वरदान अपने बच्चों को देते हैं। परमपिता परमात्मा शिव तो निराकार हैं, ज्योति स्वरूप हैं इसलिए ब्रह्मा बाबा के मुख द्वारा बच्चों को संदेश देते हैं। बाबा अपने बच्चों को सौगात में स्वर्ग की बादशाही देते हैं। नेपाल में भी जैसे भैरहवा, बुटवल, पोखरा, काठमाण्डू, वीरगंज, विराटनगर आदि हर शहर में बाबा के आश्रम हैं। आप अपने नजदीकी शहर में पता करेंगे तो अवश्य मिलेगा। इतने में बस नरायन घाट पहुँची, भाई ने ओमशान्ति बोला और कहा, मुझे यहीं उतरना है। मैं भी उन्हें ओमशान्ति बोला फिर पत्रिका देने लगा तो कहा, आप काठमाण्डू जा रहे हैं, बस सुबह पहुँचेगी, आराम के समय एक बार फिर पढ़िएगा।

बाबा से मिलने के लिए मन उतावला हो उठा

भाई चला गया लेकिन मानस में ऐसी अजूबी छाप लगा गया कि वे ही बातें घूमने लगी। बाबा, बाबा मन लगातार बोलता रहा। चिन्तन चलता रहा – कैसा होगा बाबा, बाबा का ज्ञान कैसा होगा जिसे ग्रहण करने से विकारी जीवन निर्विकारी हो जाता है और बाबा की शिक्षाओं से नया जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है और लोग बेमिसाल बन जाते हैं। भाई नमस्ते न बोलकर ओमशान्ति बोला, क्या अर्थ होता है ओमशान्ति का? बाबा विकारों का दान लेते हैं, बदले में स्वर्ग की बादशाही देते हैं, इसका भाव क्या है? अचानक मेरे मन ने कहा, बाबा जरूर मानव के रूप में फरिश्ता होंगे। फिर याद आने लगा कि बाबा की शिक्षा ग्रहण करने वाले भाई-बहनों का जीवन बड़ा ही निराला होता है। उनके जीवन में कभी दुख-दर्द नहीं होता, यें बातें सोचकर मन उतावला हो गया कि कब बाबा से मिलूँ और आश्रम का ज्ञान प्राप्त करूँ। मैंने मन ही मन निश्चय किया कि बाबा का ज्ञान अवश्य लूँगा, उनके बताए श्रेष्ठ मार्ग पर अवश्य चलूँगा ताकि भटकने वाली ज़िन्दगी को नई रोशनी मिले, निराशा दूर हो, बाबा के स्नेह, प्यार की शक्ति का कमाल प्राप्त हो।

क्रोध की जगह करुणा

छुट्टियों में घर आया तो सर्व प्रथम नजदीकी सेवाकेन्द्र चुनार गया। आश्रम देखते ही मन खुशियों से भर गया तथा स्नेह और ममता की मूरत निमित्त बहन के मीठे बोल एवं ज्ञानयुक्त बातें सुनकर संशय गायब हो गया। तत्पश्चात् साप्ताहिक कोर्स किया एवं भाई-बहनों के सहयोग से अपने गाँव में एवं नजदीकी मार्केट में बाबा के ज्ञान की प्रदर्शनी लगवायी। ज्ञान प्रदर्शनी का प्रभाव इतना अच्छा पड़ा कि कई बच्चे बाबा के बन गए। बाबा ने कमाल ऐसा किया कि निरर्थक ज़िन्दगी, जिसका कोई भविष्य नहीं था, को 21 जन्मों के लिए सुख-शान्ति दे दी। पहले उस दिल्ली वाले भाई का आभारी हूँ जिसने ओमशान्ति का रास्ता बताया। अपने घर पर ही गीता पाठशाला का संचालन युगल करती है और कई भाई-बहनें आते हैं। मेरा जीवन काँटों के समान था, जो बाबा के ज्ञान, गुणों को धारण करने से विकार मुक्त हो गया है। निर्विकारी बनना ही फूल के समान बनना है। अब मैं अपने को चेक करता हूँ तो पाता हूँ कि काम की जगह पवित्रता आ गई है, क्रोध की जगह करुणा आ गई है, ईर्ष्या, द्वेष, नफरत की जगह कल्याण और मैत्री का भाव आ गया है। अत: अब न मुझे लोभ क्षुब्ध करता है और न मोह मोहित करता है। बड़ा ही निश्चिंत निराला जीवन हो गया है। विकार युक्त जीवन ही नारकीय जीवन होता है जो काँटों से भी भयंकर होता है।

मेरा विनम्र निवेदन है कि आप सभी भाई-बहनें बाबा के नजदीकी सेवाकेन्द्र पर अवश्य जाएँ। सुख, शान्ति, आनन्द की प्राप्ति अवश्य होगी। हिम्मत से कदम बाबा की तरफ बढ़ाएँगे, तब बाबा हजार कदमों से आगे बढ़कर आपको अपनी बाँहों में समा लेंगे और ज्ञान रत्नों से सजा देंगे। ऐसे हैं हम सबके प्यारे बाबा, शिव बाबा।

बाबा की प्यार भरी ममता और दुलार देखिए कि बहुत दूर परमधाम होने पर भी मात्र एक क्षण में ही ब्रह्मा तन में प्रवेश करके, साकारी रूप धारण करके अपने सिकीलधे बच्चों से मिलन मनाते हैं और बच्चों को ज्ञान देते हैं। गुणों के दाता बाबा, आपकी याद से हमारे जीवन में खुशियों की बहार आ गई है। लगता है कि स्वर्ग की बादशाही अभी मिल गई है। बाबा आपने अपने साथ में हमें भी ले लिया है जिससे हमारे सभी सपने पूरे हो गए हैं। बाबा आपने हमें उपहार में अतीन्द्रिय सुख का वरदान दे दिया है। बाबा आपके ज्ञान से सोई हुई आत्मा की ज्योति जग गई है जोकि मोती की तरह चमकने लगी है। बाबा, आपने तो चमकते हुए मोती समान इस आत्मा को अपनी माला में गूँथ लिया है। मुझ आत्मा को आपने भक्ति के फल में ज्ञान, गुण और पावनता का वरदान दिया है। इस उपकार के बदले में बाबा मैं आत्मा आप पर बलिहार जाती हूँ। ❖

संपूर्ण स्वच्छता की ओर

ब्रह्माकुमारी ज्योत्सना, दिल्ली (मोहम्मदपुर)

सदा खुश और सदा स्वस्थ रहना है तो सम्पूर्ण स्वच्छता को अपनाओ। गन्दगी, चाहे वातावरण की हो, शारीरिक हो या मानसिक हो, दु:ख और बीमारियों का मूल कारण है। स्वच्छता सबको पसंद है, अस्वच्छता किसी को भी पसंद नहीं है।

वातावरण की स्वच्छता

बीमारियों के कीटाणु गंदगी में ही पैदा होते हैं इसलिए आस-पास के कूड़े-कचरे की सफाई करना जरूरी है। कहावत है कि वृत्ति का प्रभाव वातावरण पर पड़ता है इसलिए बाहर की स्वच्छता के साथ-साथ अन्दर की दृष्टि-वृत्ति को भी स्वच्छ रखना आवश्यक है। जितना हम आत्मिक भाई-भाई की दृष्टि-वृत्ति को पक्का करेंगे, उतना वातावरण शक्तिशाली बनेगा।

प्रकृति की स्वच्छता

अग्नि, जल, वायु, धरती, आकाश – प्रकृति के इन पांच तत्वों को हम जितना साफ रखेंगे, उतना हमें प्रकृति से सुख मिलेगा। प्रकृति का गुण है देना, बहुगुणा करके देना और माफ करना। मनुष्यों का अवगुण है लेना, छीन लेना या बदले की भावना रखना। आज लाखों मनुष्यों की नकारात्मक ऊर्जा के कारण प्रकृति असंतुलित हो गई है और हमें भयंकर प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। इससे बचने के लिए प्रकृति के तत्वों को पवित्र संकल्पों का योगदान दें।

शारीरिक स्वच्छता

प्रतिदिन नहाना, शौच के बाद नहाना, नाखून काटना, साफ कपड़े पहनना आदि शारीरिक स्वच्छता है। साथ ही कर्मेन्द्रियों द्वारा किसी को भी दु:ख देने वाला कर्म नहीं करना है। शरीर द्वारा दूसरों को जितना हम सुख देंगे, उतना शरीर से सुखी रहेंगे। शरीर हमारे लिए एक साधन है। जैसे चाकू से हम सब्जी, फल इत्यादि काटें या किसी को चोट पहुँचाएँ, उसके लिए चाकू जिम्मेवार नहीं है। चाकू को जेल की सज़ा नहीं मिलती है। ऐसे ही आंख, कान, हाथ आदि कर्मेन्द्रियों को कैसे इस्तेमाल करते हैं, उसका अच्छा व बुरा फल हमें (आत्मा को) भोगना पड़ता है। आज बहुत सारे लोग अंधे, गूंगे, बहरे और विकलांग क्यों हैं? इसका उत्तर हमें कर्म और फल के ज्ञान को समझने से मिल रहा है।

खान-पान की स्वच्छता

कहावत है, जैसा अन्न वैसा मन, जैसा पानी वैसी वाणी। मेहनत और ईमानदारी से कमाए हुए धन से खाद्य पदार्थ खरीदकर, स्वच्छता और शुद्ध भावना से पकाकर, परमात्मा की याद में खाने वाले ही स्वस्थ जीवन का आनन्द लेते हैं। किसी को दु:ख देकर, तड़पाकर हम पेट तो भर लेंगे लेकिन साथ में नकारात्मक ऊर्जा भी अन्दर चली जाएगी जिससे शारीरिक और मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाएँगे इसलिए भोजन में किसी की आह या बद्दुआ की नकारात्मक ऊर्जा नहीं होनी चाहिए। दवा से ज्यादा काम दुआ करती है।

मानसिक स्वच्छता

सबके प्रति दया, क्षमाभाव, नि:स्वार्थ स्नेह, शुभ भावना और सबके लिए सुख की कामना करने वाले ही मानसिक रूप से स्वस्थ हैं। निंदा-प्रशंसा, सुख-दु:ख सभी में एकरस स्थिति में रहना ही शक्तिशाली और स्वच्छ

आत्मा की निशानी है। हमारा मन किसी के प्रति घृणा, ईर्ष्या, काम, क्रोध, लोभ आदि गन्दे विचारों से मुक्त रहे, नहीं तो मन में अशांति पैदा होती है। अशांत मन रोग प्रतिरोधक शक्ति को कमज़ोर करता है और अनेक बीमारियों को जन्म देता है इसलिए सदा खुश और स्वस्थ रहें। ग्लानि करने वालों के प्रति भी घृणा नहीं, क्षमाभाव रखें और बहुत दुआएँ दें तो मन की शान्ति कायम रहेगी। शुभ भावना रखेंगे तो पिछले हिसाब-किताब भी जल्दी चुक्ता हो जाएँगे और स्वस्थ जीवन का आनन्द लेते रहेंगे।

दिल की स्वच्छता

कहा गया है, सच्चे दिल पर साहब राजी। परचिंतन, परदर्शन के बदले स्वचिंतन, स्वदर्शन कर अपने अवगुणों और कमियों को निकाल कर साफ दिल रखना है। इससे ही प्रभुप्रिय और लोकप्रिय बनेंगे। किसी के अवगुण या कमज़ोरी को देखना, सुनना, चिंतन करना, वर्णन करना या दूसरों को सुनाना माना ही स्वयं में धारण करना और वातावरण को खराब करना है। मनसा-वाचा-कर्मणा किसी के दिल को नहीं दु:खाना है क्योंकि जो हम देंगे, सुख या दुख वो हमें वापस मिलेगा। किसी की बातों को फील करना, मूड ऑफ करना या बदले की भावना रखना, अपने भाग्य को कोसना, अपने दिल को दुखाना यह सब अस्वच्छता है। स्वचिंतन उन्नति की सीढ़ी और परचिंतन पतन की जड़ कहा जाता है। हम जितना स्व-चिंतन, आत्म-चिंतन और परमात्म चिंतन करेंगे तो पतित से पावन (स्वच्छ आत्मा) बन जायेंगे। पांच विकार (काम-क्रोध-लोभ....) ही हमें पतित बनाते हैं और सब दुखों का मूल कारण हैं। पवित्र आत्मा विकारों से मुक्त होकर देवत्व को प्राप्त कर स्वर्गीय सुख का आनन्द ले सकती है।

ऐसे करें श्रेष्ठ चिन्तन

मैं एक शुद्ध, शांत, शक्तिशाली और खुशनसीब आत्मा हूँ। सर्वशक्तिमान, परमपवित्र, पतित-पावन, दु:खहर्त्ता-सुखकर्त्ता परमात्मा की अविनाशी संतान हूँ। सृष्टि के सर्वोच्च रचयिता की सबसे श्रेष्ठ खूबसूरत रचना होने के कारण वो मुझे बहुत प्यार करते हैं और मुझे साफ-सुथरा (स्वच्छ आत्मा) देखना चाहते हैं। मेरे अन्दर मेरे रचयिता की खूबियां भरी हुई हैं। मैं अपने रचयिता की तरह सर्व गुणों से भरपूर और सुखदाई हूँ। मेरे से सबको सुख-शांति की किरणें प्राप्त हो रही हैं। मेरी पवित्रता की तरंगों से प्रकृति भी सतोप्रधान बन रही है। वाह! मेरा श्रेष्ठ भाग्य वाह! ❖

ज्ञानामृत

ब्रह्माकुमार अमन, मंडावली (दिल्ली)

ज्ञान रूपी अमृत सबको पिलाने वाली,
सबके दिलों को हर्षाने वाली,
जन्मों के सोए भाग्य जगाने वाली,
जन-जन तक बाबा का संदेश पहुँचाने वाली,
प्रभु-प्यार का अनुभव कराने वाली,
अनुभवों के द्वारा अनुभवी बनाने वाली,
देश-विदेश की सेवाओं के चित्र दिखाने वाली,
ज्ञानामृत, सच में तू बड़ी निराली।।

ज्ञान के गुह्य राज खोलती,
रस्मों के आध्यात्मिक रहस्य बोलती,
प्रेरणादायक कहानियाँ बताती,
दिव्य गुणों की धारणा करवाती,
इसलिए सबके मन को भाती।।

तुमसे ही लिखती है संजय की कलम,
तेरे संपादक भी नहीं हैं किसी से कम,
यूँ ही आगे से आगे बढ़ते रहें तेरे कदम,
तू ही लहराएगी दुनिया में बाबा का परचम,
तेरी महिमा के लिए शब्द पड़ रहे हैं कम,
तुझे बनाने वालों का शुक्रिया करता मैं हरदम।।

भाग्य या त्याग

ब्रह्माकुमार सुधीर, चंडीगढ़

'वो समय का इंतजार करते रहे और समय गुजरता रहा,
हम भाग्य का सिमरण करते रहे और भाग्य बनता रहा।'

जब किसी बच्चे का लक्ष्य उच्च अधिकारी बनने का होता है तो वह रात-दिन जागकर पढ़ता है। दोस्तों के साथ इधर-उधर घूमना बंद कर देता है। आवारागर्दी इत्यादि के कार्यक्रम भी छोड़ देता है। इसी प्रकार, जब भाई-बहनों का प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने आना होता है तो वे अपने पुराने चले आ रहे जीवन में परिवर्तन और नए जीवन में परिवर्द्धन करने लगते हैं। जिनके संग से समय व्यर्थ जाता था, ऐसे मित्रों का त्याग करके उन का संग करने लगते हैं जिनके संग से आध्यात्मिक उन्नति हो। सात्विक भोजन ग्रहण करने लगते हैं। वे महसूस करने लगते हैं, जीवन अनमोल है, इसे हीरे-तुल्य बनाना है, ऊँचे ज्ञान और राजयोग के प्रयोग से बुद्धि को सालिम, कुशाग्र बनाना है। घर-परिवार में बहुत प्यार से रहने लगते हैं। ऐसा वो अपने ऊँचे भाग्य को सामने रखकर करते हैं।

मिलती हैं अखुट शक्तियाँ

इसे देखकर, वे मित्र-सम्बन्धी, जो इस ज्ञान से अनभिज्ञ हैं, समझते हैं कि इन्होंने तो बहुत बड़ा त्याग किया है। पहले तो सुबह 6 बजे तक और कभी-कभी तो 7-8 बजे तक भी सोए रहते थे, अब सुबह 4-5 बजे उठ मेडिटेशन करते हैं। उन्हें लगता है, नींद का कितना त्याग करते हैं! परन्तु वे यह नहीं जानते कि सुबह अति प्यारे पिता परमात्मा (Most beloved God Father) की याद में बैठ कितनी अखुट शक्तियाँ मिलती हैं! उदाहरण के तौर पर, नरेन्द्र मोदी जी को जब पता पड़ा कि उन्हें भारत के प्रधानमंत्री के रूप में चुन लिया गया है तो उन्होंने तुरन्त ही गुजरात के मुख्यमंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया और नई दिल्ली आकर प्रधानमंत्री निवास में रहने लगे। अगर गुजरात के किसी अनपढ़ या अनभिज्ञ मनुष्य को, जो प्रधानमंत्री पद की या नई दिल्ली की कोई जानकारी न रखता हो, बताया जाए कि मोदी जी गुजरात छोड़कर चले गए हैं, तो वो समझेगा कि क्या बात हुई, इतने वर्षों तक गुजरात में सेवा करके, अब गुजरात को क्यों छोड़ रहे हैं, क्या गुजरात का, गुजरात के परिवार इत्यादि सबका त्याग कर देंगे? दूसरी तरफ मोदी जी को कहा जाए, आपने इतना बड़ा त्याग कर दिया है तो वे हैरान होंगे और कहेंगे, यह तो मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे देश के प्रधान सेवक के रूप में चुना गया है, मेरे लिए तो सभी प्रदेश एक समान हैं, ऐसे भाग्य के पीछे यह त्याग तो कुछ भी नहीं है। इसी प्रकार ब्रह्माकुमारीज़ में आने वालों को भी इतना स्थाई मानसिक सुख, आनंद मिलता है कि वे जीवन को पतन की ओर ले जाने वाली बातों से स्वत: न्यारे हो जाते हैं।

त्याग नहीं, सफलता

यह तो सामान्य बात है, ''बिना त्याग के भाग्य नहीं मिलता'', ''कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है'' और भी अच्छा ''कुछ पाने के लिए कुछ बोना पड़ता है। ''जैसा बीज बोएंगे वैसा फल पाएंगे। ऐसा ऊँचा भाग्य जहाँ स्वयं परमात्मा बैठ ज्ञान, गुणों से श्रृंगार करते हैं वहाँ सुबह उठना, सात्विक खाना आदि त्याग नहीं लगते और ही दिल से निकलता है 'पाना था सो पा लिया'। सब मानते हैं कि अकेले आये थे, अकेले जाना है, दुनिया तो मुसाफिर खाना है। क्यों ना अब यह भी जान लें कि कहाँ से आए थे, कैसे जाना है, कौन-से सत्कर्म साथ लेकर जाने हैं। इससे जन्म-जन्मान्तर के लिए भाग्यशाली बन जाएंगे और त्याग, त्याग नहीं, सफलता का साधन बन जाएगा। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1.नारनौल- 'खुशनुमा जीवन का पैगाम आपके नाम' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु.रतन बहन, हरियाणा विधानसभा उपाध्यक्षा बहन संतोष यादव, ब्र.कु.लीला बहन, ब्र.कु.सुरेश शर्मा, ब्र.कु.मनोरमा बहन तथा ब्र.कु.ऊषा बहन। **2.डेराबस्सी-** किसान सशक्तिकरण अभियान कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पंजाब के योजना मंत्री भ्राता दीपिन्दर सिंह ढिल्लो, व्यापार मंडल प्रधान भ्राता प्रेम सिंह, ब्र.कु.विजय बहन, ब्र.कु.राजबाला बहन तथा अन्य। **3.गोंदिया (महाराष्ट्र)-** ब्र.कु.राजूभाई को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते हुए मध्यप्रदेश के कृषि मंत्री भ्राता गौरीशंकर बिसेन तथा सांसद नानाभाऊ पटोले। साथ में ब्र.कु.प्रेमलता बहन। **4.शान्तिवन-** सिसको की तरफ से ब्रह्माकुमारीज एज्युकेशनल सोसाइटी को प्राप्त 'अवार्ड फार बेस्ट वाटर एक्सास्ट्रक्चर' राजयोगिनी दादी जानकी जी को दिखाते हुए ब्र.कु.शंभु भाई। **5.शान्तिवन-** ब्र.कु.जगदीशचन्द्र हसीजा के जीवन पर आधारित डाक्यूमेन्ट्री फिल्म का अनावरण राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी से करवाते हुए ब्र.कु.हरीश भाई। **6.खोरधा-** उड़ीसा के परिवहन मंत्री भ्राता रमेशचन्द्र माझी और विधायक भ्राता राजेंद्र कुमार को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.अनु बहन उनके साथ। **7.लातूर-** सूखाग्रस्त किसानों की स्वास्थ्य सेवा के लिए केनरा बैंक के कार्यकारी निदेशक भ्राता रावत जी, ब्र.कु.नंदा बहन को एम्बुलेंस वैन के लिए चेक प्रदान करते हुए। **8.नई दिल्ली (पाण्डव भवन)-** दिल्ली स्कूटर्स एसोसिएशन के एडवाईजरी बोर्ड मेम्बर भ्राता लोकेश नारंग एवं बहन नारंग को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.पुष्पा बहन तथा ब्र.कु.शिवानी बहन। **9.सोनीपत (सेक्टर-15)-** गीता जयंती के पावन अवसर पर हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष भ्राता कँवर पाल गुज्जर तथा प्रदेश प्रभारी भ्राता ललित बत्रा, ब्र.कु.प्रमोद बहन को सम्मानित करते हुए। **10.करनाल (सदर बाजार)-** हरियाणा के खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री भ्राता करण देव कंबोज को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.किरण बहन।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : February, 2016.

शान्तिवन-
मुख्यालय अवलोकन के बाद महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री भ्राता देवेन्द्र फडणवीस के साथ राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु.नलिनी बहन, ब्र.कु.संतोष बहन, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.भरत भाई तथा अन्य।

शान्तिवन-
राष्ट्रीय किसान सशक्तिकरण दिव्य महोत्सव का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भ्राता अशोक तंवर, पंजाब कृषि विपणन बोर्ड के उपाध्यक्ष भ्राता रविन्द्र सिंह चीमा, ब्र.कु.निर्वैर भाई, ब्र.कु.चक्रधारी बहन, ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.क.मुन्नी बहन, ब्र.कु.गीता बहन तथा अन्य।

जयपुर(राजापार्क)-
राजस्थान की मुख्यमंत्री बहन वसुंधरा राजे को दादी जानकी के शताब्दी समारोह का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु.पूनम बहन।

दिल्ली(ओ.आर.सी.)-
15वें वार्षिक दिवस महोत्सव 'खुशनुमा जिन्दगी' का उद्घाटन करते हुए दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष भ्राता रामनिवास गोयल, सी.बी.आई के पूर्व निदेशक डॉ.डी.आर.कार्तिकेयन, राजयोगिनी दादी रुक्मिणी जी, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.आशा बहन तथा अन्य।